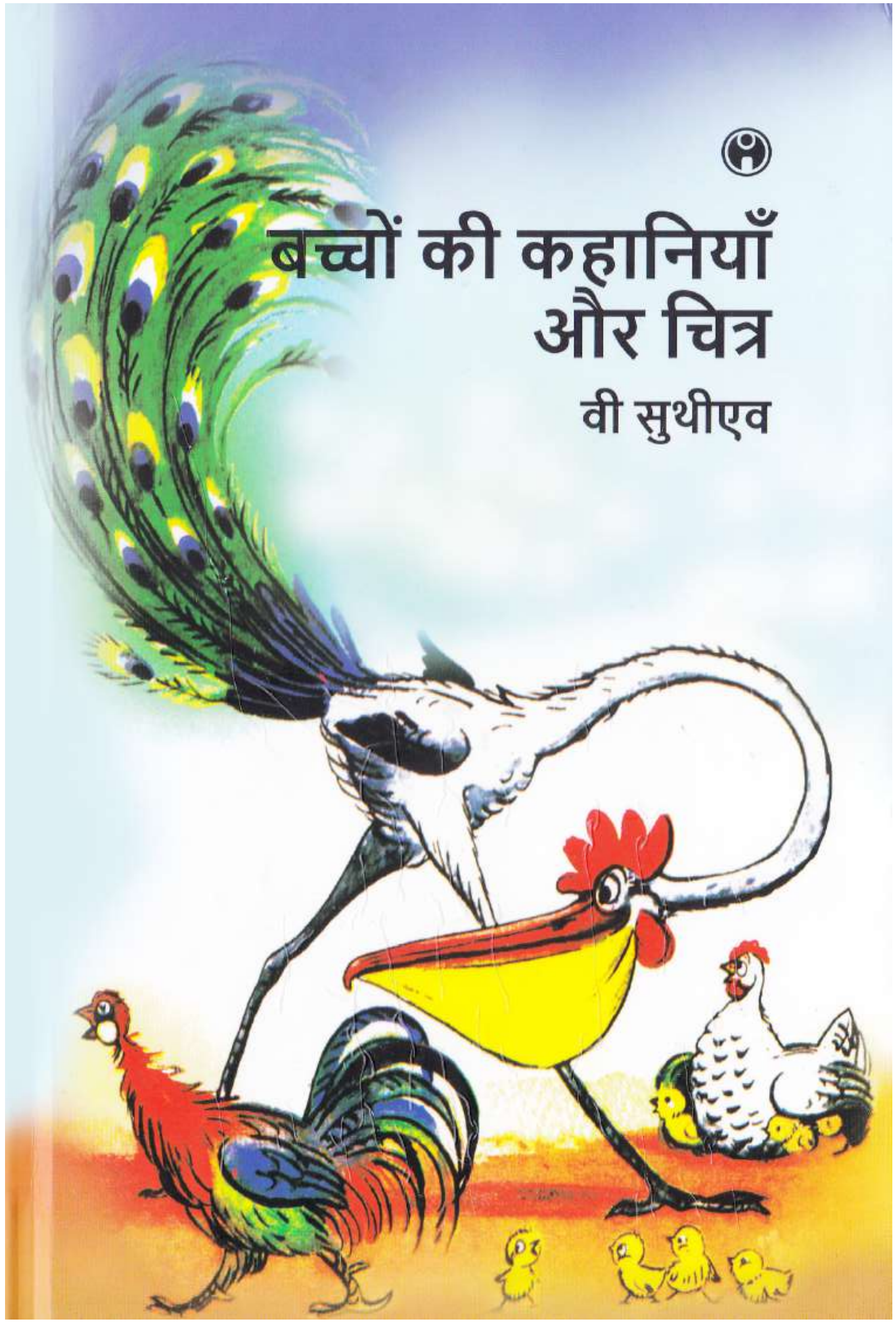
बच्चों की कहानियाँ और चित्र

वी सुथीएव



INSIGHT PUBLICA

Nadakkave, Kozhikode, Kerala, India
www.insightpublica.com
e-mail:Insightpublica@gmail.com
Bachchon Kee Kahaaniyaan Aur Chithru
(Hindi)
Vladimir Suteev
Translated by **Sabitha S Babu**
First Insight Edition: November 2021
ISBN 978-93-5517-054-5
Printed and Published by
InsightinPublica Printers & Publishers Pvt Ltd.
₹ 499

बच्चों की कहानियाँ और चित्र

वी सुथीएव

अनुवादः सबिता एस बाबू

INSIGHT PUBLICA ®

सोविएट के वे शानदार पुस्तक फिर एक बार।

भूत पूर्व सोविएट यूनियन की पुस्तकें जो केरल में व्यापक रूप से प्रसारण में थी, उन पुस्तकों की यादें हमारे मन में आज भी ताज़ा हैं। पुस्तक, जो शानदार किस्सों, दिलचस्प वैज्ञानिक तत्वों और मनोहर चित्रों से भरे थे और जो पाठकों के मन मोह चुके थे। उन पुस्तकों का हम पर एक अमिट प्रभाव था और अविस्मरणीय वाचन का अनुभव भी प्रदान किया था।

अब जब यूनियन न रहा तो, मनभावन कहानियों के वह पुस्तक भी न रहे। बस मीठे यादों वाले अतीत की ललक बाकी रह गई। फिर भी पाठक उन अनुपम पुस्तकों की लगातार खोज करते आ रहें हैं। इसलिए इनसाइट पब्लिका में हम उनमें से कुछ पुस्तकों को उसी पुराने अंदाज़ में प्रकाशित कर रहें हैं। और अत्यंत कृतज्ञता और आनंद के साथ मैं आपको बताना चाहता हूँ की इस योजना में पाठकों ने पूरे दिल से हमारा समर्थन किया है।

इस परियोजना के दौरान हमें उस महान देश के साहित्य कल्पना की गहराई और विशालता के बारे में एहसास हुआ। अनुवाद के द्वारा वह उदात्त कहानियाँ कई देशों और भाषाओं की सीमायें लांघ चुकी थी। यह पुस्तक सर्वव्यापी थे - सिर्फ एक उत्पन्न की तरह नहीं, बल्कि एक संस्कृति के रूप में।

हमने सोविएट कहानियों को भारतीय भाषाओं में अनुवाद के पुनः प्रसिद्धीकरण के इस साहसिक यत्न का श्रम यह सोचकर किया की इससे इनसाइट पुब्लिका को भी आवेग अवलम्ब मिलेगा।

आप पाठकों को अब स्कैन किये हुए फ़ोटोस्टेट कापियों से अब और नाखुश होने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। इनसाइट पब्लिका उन पुस्तकों को आपके हाथ में एकदम पहले वाली ताज़गी और मिठास के सात पहुंचाएगी।

अत्यंत विनम्रता और गर्व से हम आपके लिए वहीं शानदार सोविएट कहानियाँ एक बार और पेश करते हैं।

सुमेश इनसाइट

चूज़ा और बतख





एक दिन एक छोटा सा, नन्हा सा, प्यारा सा बतख अपना अंडा तोड़कर बाहर निकला।

"अंडे के छिलके को तोड़कर मैं बाहर आया ", उसने कहा।

वहा पर एक चूजा भी मौजूद था। उसने कहा, "मैं भी"।





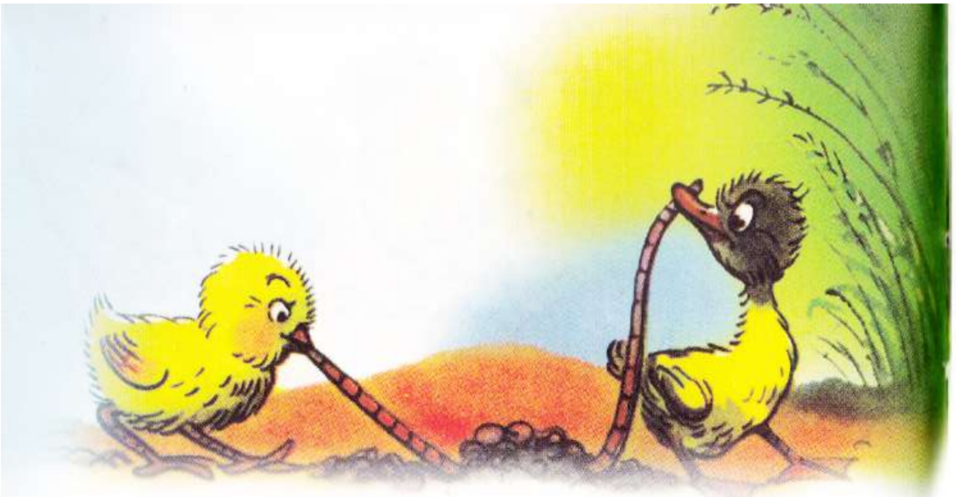
बतख ने फिर कहा "मैं चलने की कोशिश कर रहा हूँ"।

फिर से नक़ल करते हुए चूजे ने कहा, "मैं भी"।

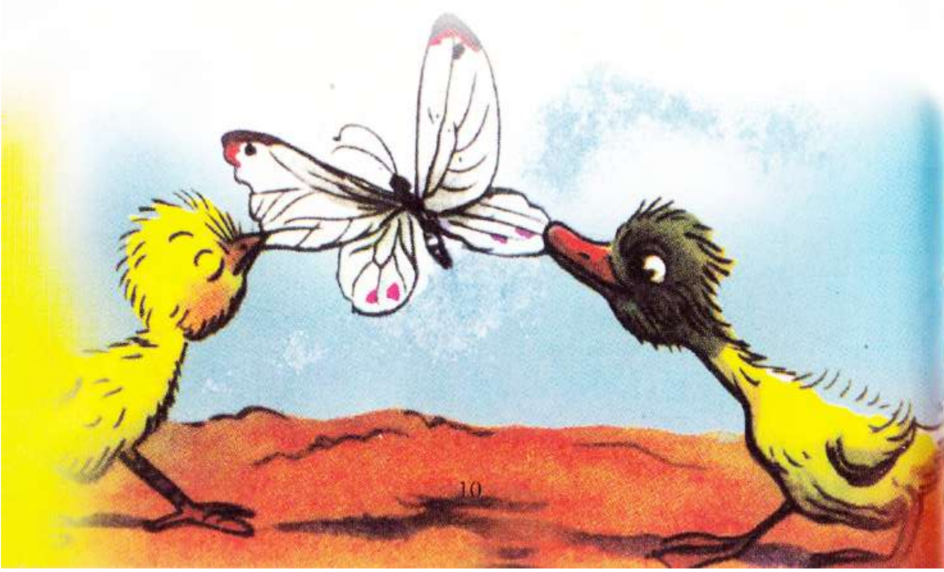
अब, बतख एक गड्ढा खोदने लगा और कहा,"मैं एक गड्ढा खोद रहा हूँ"।

चूज़े ने भी उसी बात को दुहराया "मै भी"।





इस बार बतख के हाथ मे, ज़मीन से, एक कृमि आ पड़ी।
उसने कहा," मुझे एक कृमि मिला '।
"मुझे भी" चूज़े ने फिर से,बतख के हाँ से हाँ मिलाई।
" मुझे एक तितली मिली " बतख ने बताया।
"मुझे भी" चूज़े ने कोई कसर न छोड़ी।



"मैं तैरने जा रही हूँ"
बतख ने फिर कहा।
"मैं भी", चूज़े ने कहा।



बतख तैरने लगी "देखो, देखो मैं तैर रही हूँ"।





इस बार जोर से, बतख की नक़ल उतारते हुए चूज़े ने कहा " मैं भी।

अचानक किसी की रोने की आवाज़ आ पहुंची।

"बचाओ बचाओ"



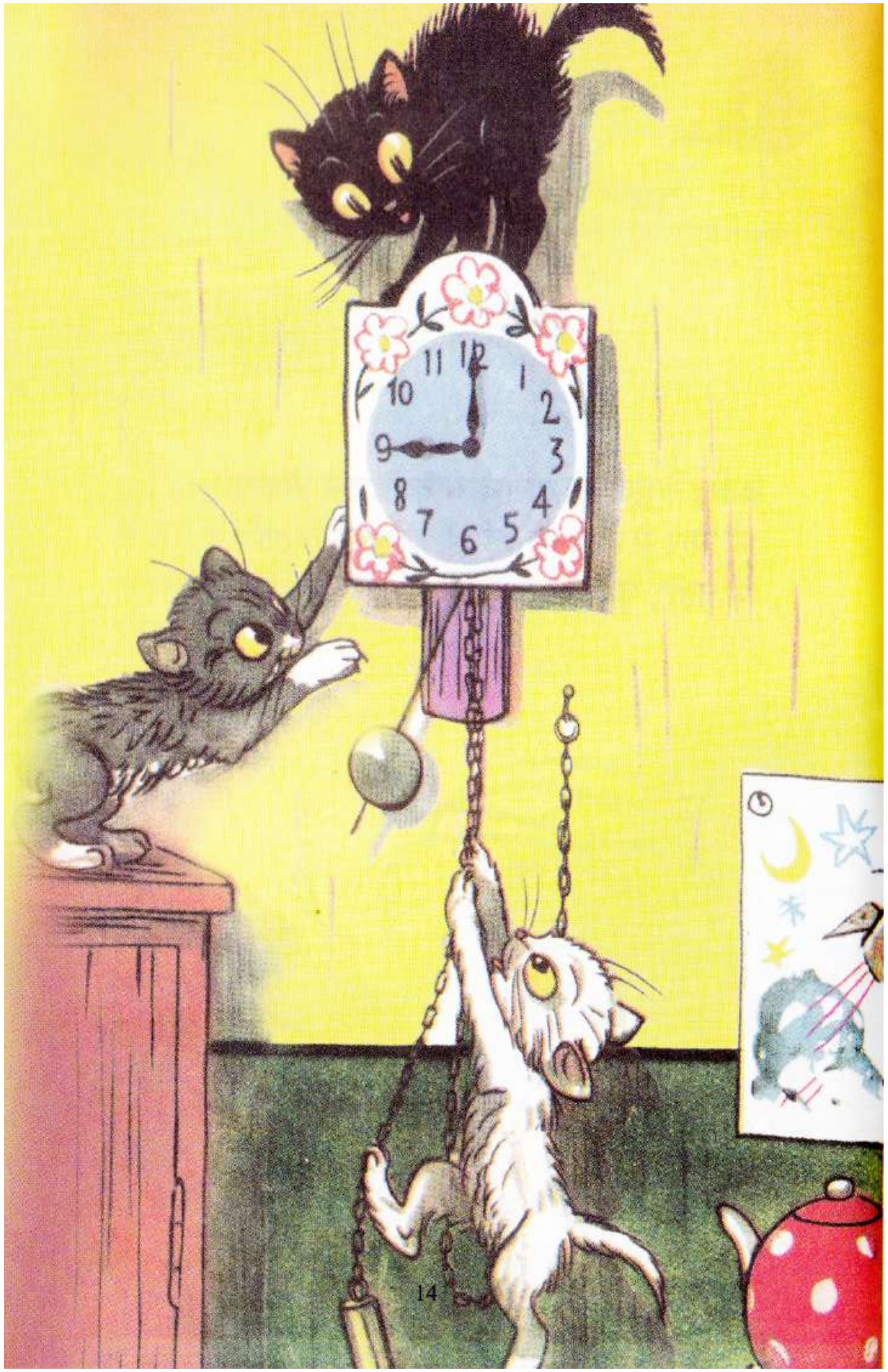


बतख ने चूजे को तालाब से घसीटकर निकला।

"मैं फिर से तैरने जा रही हूँ" बतख ने कहा।

"मैं नहीं", चूजे ने इनकार किया।







तीन बिल्लियां





यह कहानी प्यारी प्यारी मिलजुलकर रहेने वाले तीन बिल्लियों की है।

इनमे से एक बिल्ली सफ़ेद ,एक बिल्ली काली और एक धूसर रंग की थी।



एक दिन उन्होंने एक चूहे को देखा।



वे तीनो बिल्लियां चूहे के पीछे भाग पड़ी।

लेकिन चूहा, उनको चकमा देकर एक आटे की पतीले में कूद पड़ा।





बिना सोचे समझे बिल्लियां भी उस में कूद पड़ी।

लेकिन चूहा तो बहुत चालक था और वहा से निकल पड़ा।

अब पतीले से बाहर आने वाली बिल्लियां सफ़ेद रंग की हो गयी थी।





तीनो सफ़ेद रंग की बिल्लियाँ, एक मेढ़क के पीछे भाग पड़ी।

मेढ़क, तो ज़ोर से भागा और एक चिमनी के अंदर घुस गया।

बिल्लियाँ भी पीछे पीछे चिमनी के अन्दर आ पहुँची।

लेकिन मेढ़क चिमनी से बाहर निकल पड़ा।





इस बार, तीनों बिल्लियाँ चिमनी से बाहर निकलते वक्त काले रंग की हो चुकी थी।



तीनों काली बिल्लियाँ एक तालाब के पास पहुँची।



तालाब में एक मछली तैर रही थी।

उस मछली को पकड़ने के लिए तीनो बिल्लियाँ पानी में कूद पड़ी।





लेकिन मछली तैरते हुए
दूर चली गयी।



बेबस होकर, तीनो बिल्लियाँ तालाब से निकल पड़ी।

जब वे तालाब से बाहर आई, तब वे तीनों पूरी तरह भीग चुकी थी।



भीगी बिल्लियाँ अपने घर के लिए रवाना हुई।

जाते जाते, जब वे पूरी तरह से सूख गयी तब, वे फिर से पुराने रंग की हो गयी।

एक सफ़ेद, एक काली और एक धूसर रंग की।





कुकुर मुत्ते के नीचे





एक दिन एक चीटी बरसात से परेशान होकर भाग रही थी। उसने चारों तरफ़ देखा" इस बारिश से बचने के लिए मैं कहाँ जाऊँ ?

मैं कहाँ बैठू ?"

तभी उसकी नज़र एक कुकुरमुत्ते पर पडी।

चीटी तेज़ दौड़ी और उसके नीचे जाकर बैठ गयी।

वह बारिश के खतम होने की इन्तज़ार करती रही।

लेकिन बारिश तो रुकने का नाम नहीं ले रही थी।

उसी समय एक भीगी हुई तितली भी कुकुरमुत्ते के नीचे रेंगते हुए आ पहुँची।

"चीटी, मुझे भी इस कुकुरमुत्ते के नीचे बैठने की इज़ाज़त दो। मैं पूरी तरह भीग चुकी हूँ।

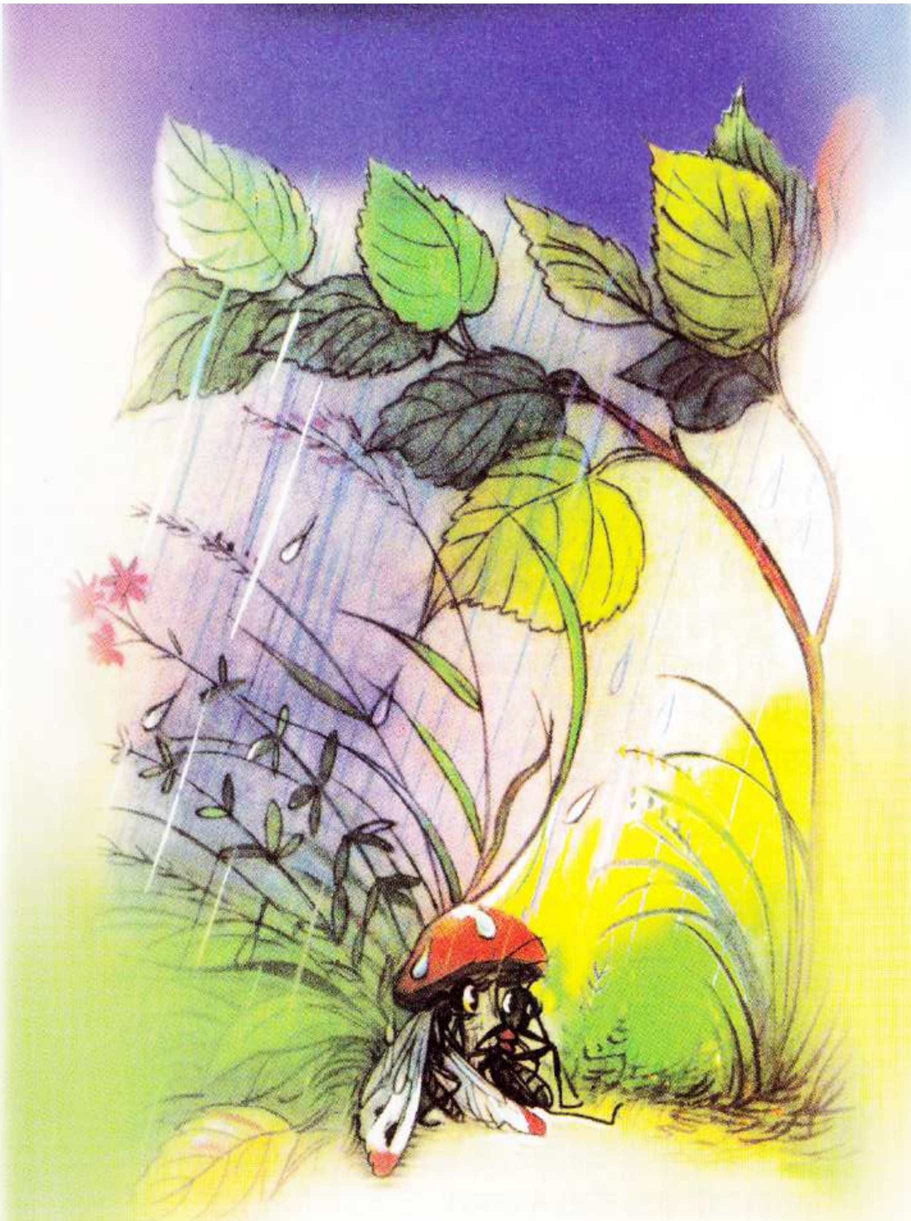
इसलिए उड़ नहीं सकती।"



"लेकिन यहाँ तो जगह नहीं है। मेरे लिए भी ये जगह काफी नहीं है।" चीटी ने कहा।

पर तितली छोड़ने का नाम नहीं ले रही थी,

"कोई बात नहीं। बहुत लोगो से ज़्यादा मज़ा आएंगा"।



इस प्रकार चीटी से तितली को भी कुकुरमुत्ते के नीचे बैठने के लिए इज़ाज़त मिली ।

बारिश तो बरस ही रही थी।

एक चूहा भाग के आया।

"क्या मैं भी तुम लोगों के साथ उसके नीचे आकर बैठूँ ? मैं भी भीगा हूँ "। उसने कहा।

"लेकिन यहाँ तो जगह नही है।"

"तो थोड़ी और घिसककर बैठो" वे घिसक गए।





चूहे को भी जगह मिली।
बरसात तो अब भी पड़ रही थी।

एक चिड़ियाँ कूद कूद कर आ पहुँची।

"मेरी पंख पूरी तरह से भीग चुकी है, और मैं थक गयी हूँ।"

उसने कहा। " मुझे भी बारिश खतम होने तक कुकुरमुत्ते की नीचे बैठने की अनुमति दे दो। मैं अपने पंखों को सुखाकर अपना थकान दूर हटाना चाहती हूँ।

"पर यहाँ तो जगह नही हैं।"

"भगवान के लिए थोड़ी जगह दे दो"।

"ठीक है"।

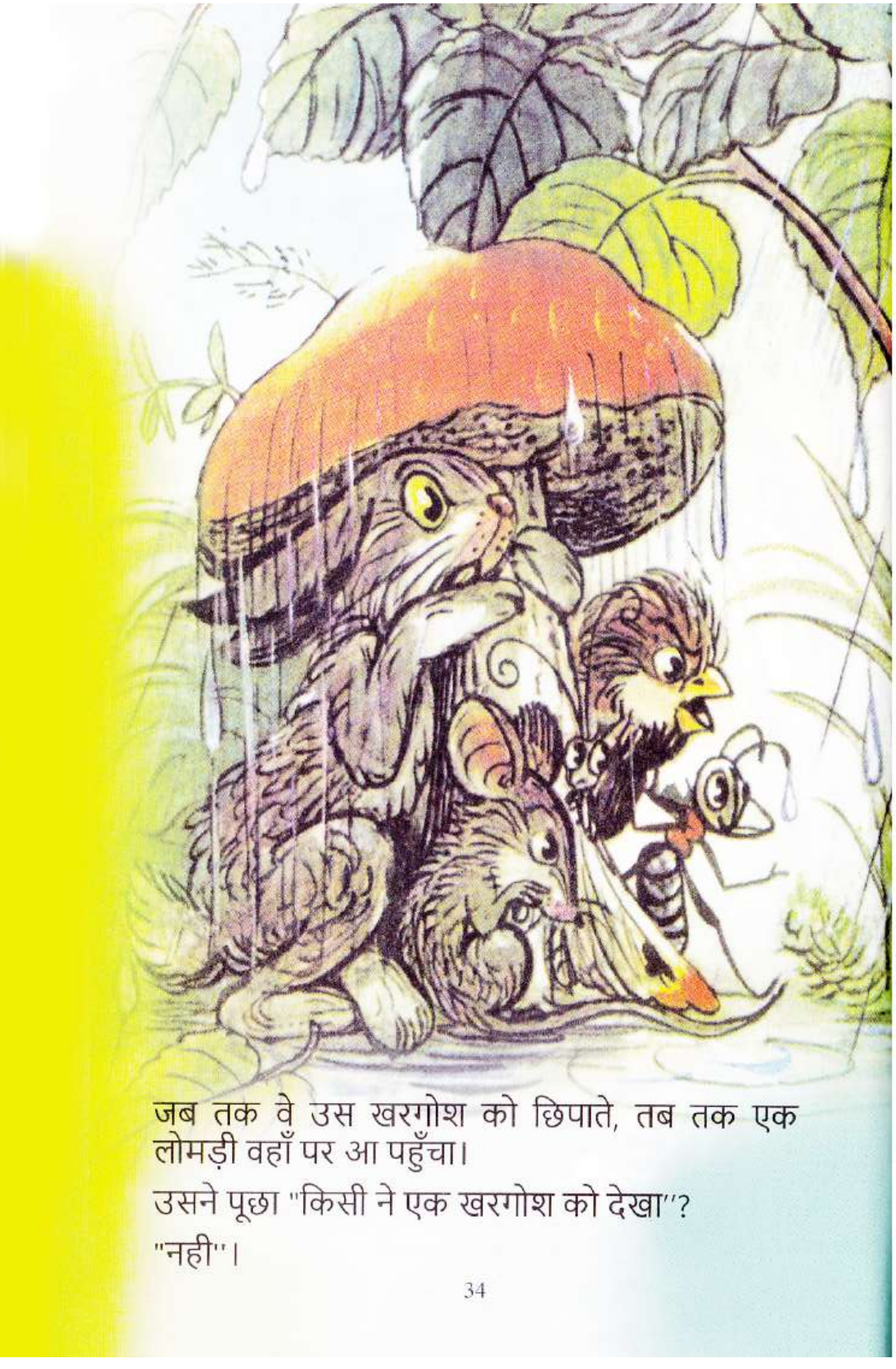




उन्होंने चिड़िया को भी बैठने दिया।

तब एक खरगोश वहाँ पर आया।
उसने भी कुकुरमुत्ते को देखा।
"मुझे बचाओ। एक लोमड़ी मेरे पीछे पड़ा हैं"।
वह चिल्लाते हुए बोला।
"बेचारा खरगोश" चीटी ने कहा।
"हम थोड़ा घिसककर बैठेते है"।





जब तक वे उस खरगोश को छिपाते, तब तक एक लोमड़ी वहाँ पर आ पहुँचा।

उसने पूछा "किसी ने एक खरगोश को देखा"?

"नही"।



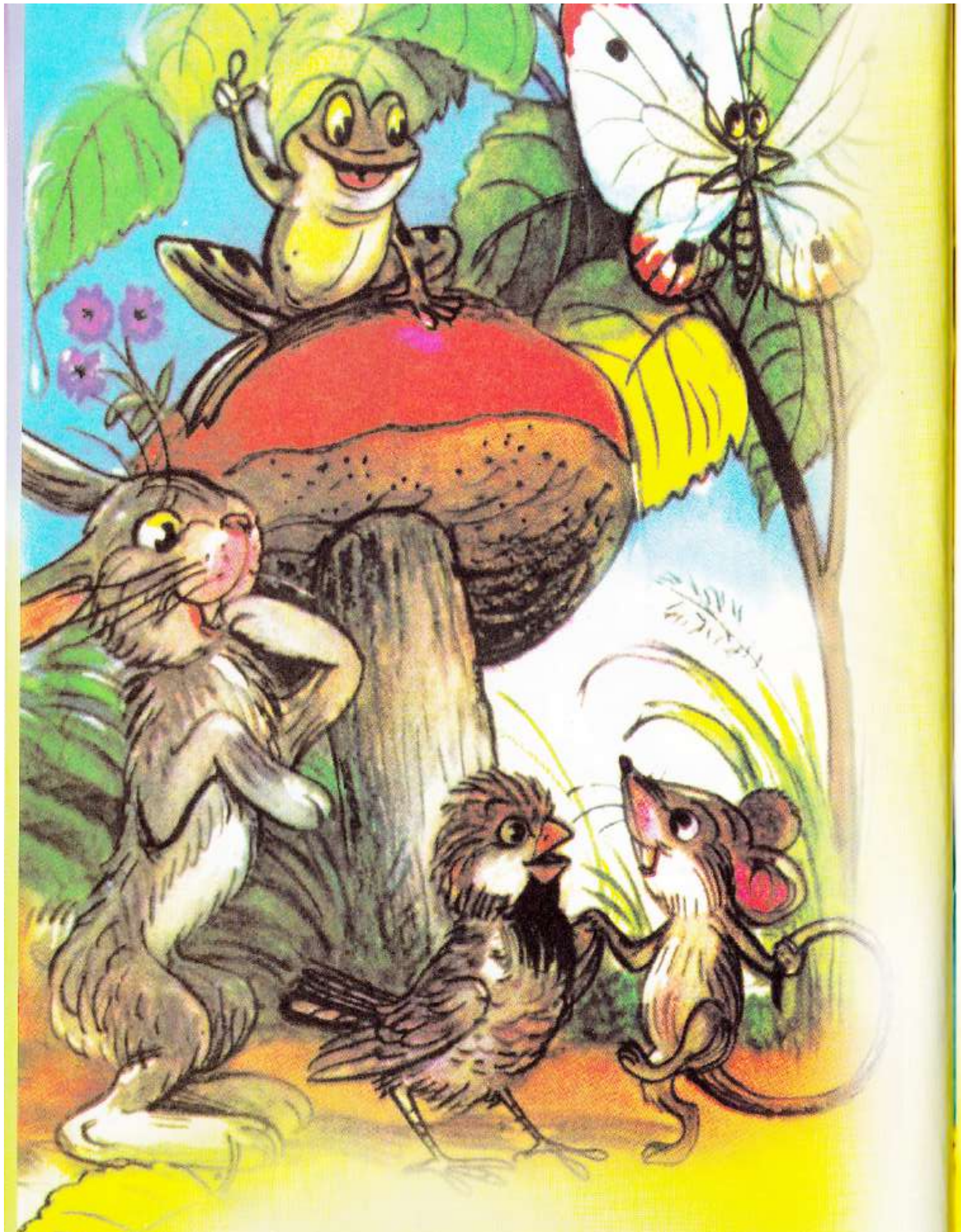
लोमड़ी पास आकर सूँघकर देखा।

"वह यही कही छुपी हुई है ना"।

"कहाँ ? यहाँ पर तो जगह ही नही है"।

लोमड़ी निराश होकर अपनी पूँछ हिलाते हुए चला गया।

तभी बारिश रुक गयी।



धूप आ गयी। सब कुकुरमुत्ते के नीचे से खुश होकर बाहर निकल पड़े।

"आशचर्य", कुछ देर बाद चीटी ने कहा।

"पहले कुकुरमुत्ते के नीचे बैठने के लिए, मुझे ही काफ़ी जगह नहीं थी,

लेकिन बाद में हम पाँच उसके नीचे समा गए"।

"क्रोम ! हा हा क्रोम"! किसी ने ज़ोर से हँसा। सबने ऊपर देखा।

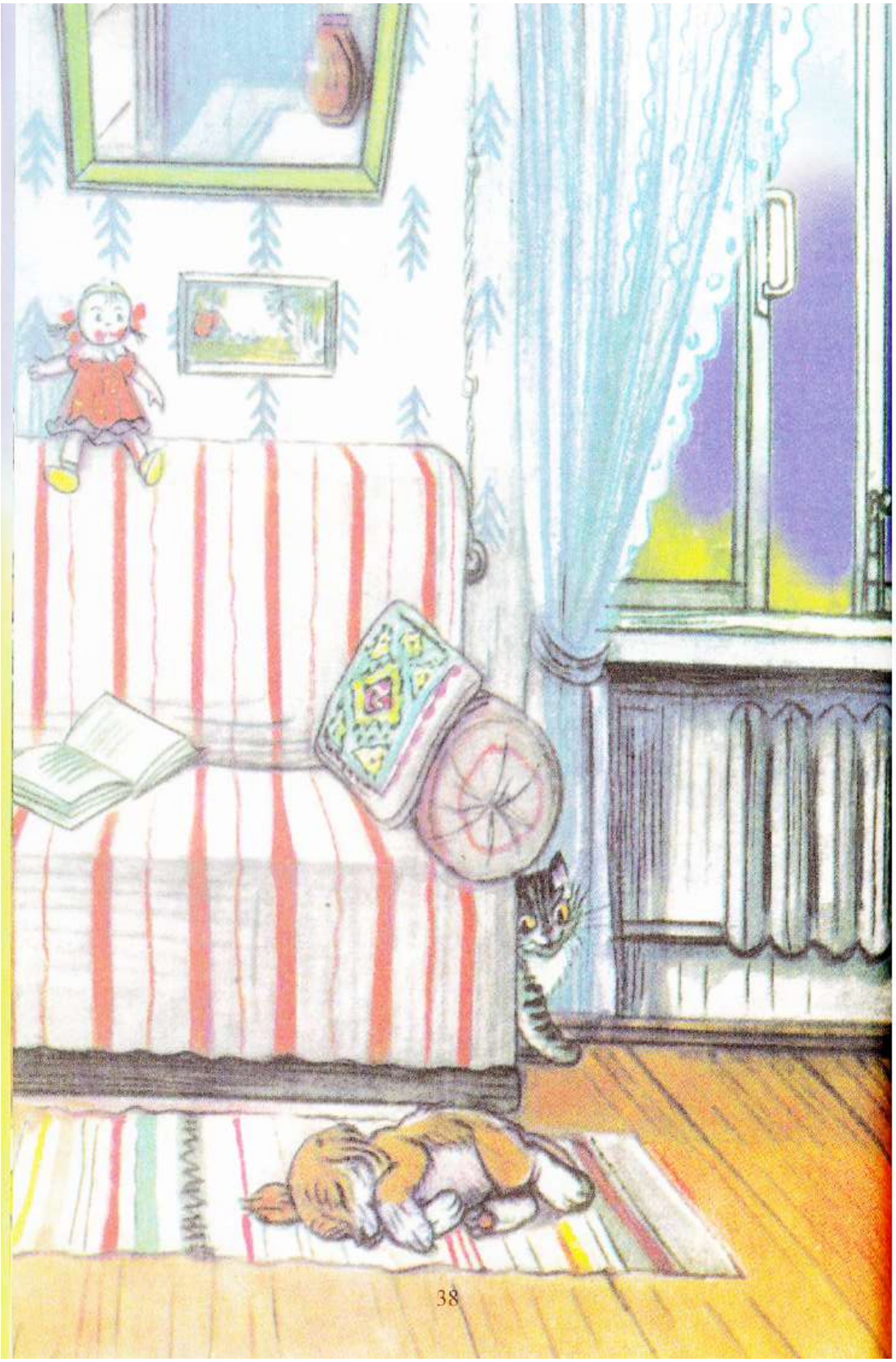
वहाँ पर कुकुरमुत्ते के ऊपर उन लोगों ने एक हस्ते हुए मेढ़क को देखा।

"कुकुरमुत्ता" बात पूरा किये बिना मेढ़क वहाँ से चला गया।

उन्होंने कुकुरमुत्ते को देखा। तभी उनको यह बात समझ आई कि उन पाँच लोगों के लिए जगह कैसे मिली।

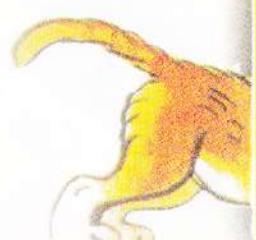
आप लोगो को समझ में आया?







किसने
कहा
म्याऊं ?



एक पिल्ला सोफे के पास बिछाई हुई चारपाई पर सो रहा था।

अचानक उसने सपने में किसी की म्याऊं कहने की आवाज सुनी।

पिल्ले ने सिर उठाकर चारों तरफ देखा लेकिन कोई भी दिखाई नहीं पड़ा।



"मैंने सपना देखा होगा" खुद ही अपने आप को तसल्ली देते हुए कहा और फिर से सोने लगा।





फिर से वही आवाज कान पर पड़ी "म्याऊं"।

"कौन है वहां पर?" पिल्ले ने उछल कूद कर सारे कमरे में देखा।



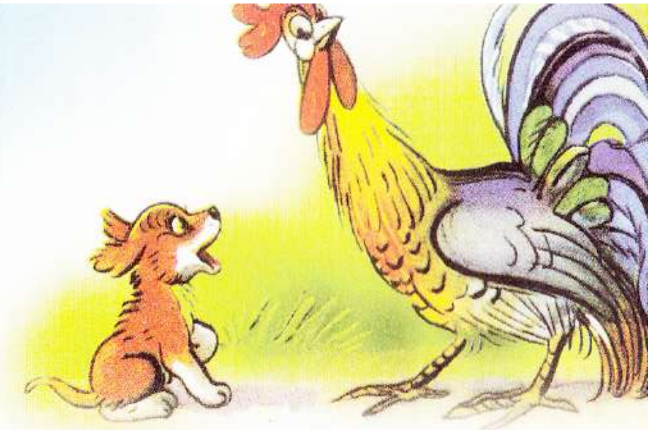
उसने दौड़ कर खटिए के नीचे देखा फिर मेज के नीचे।

लेकिन कोई नहीं मिला।

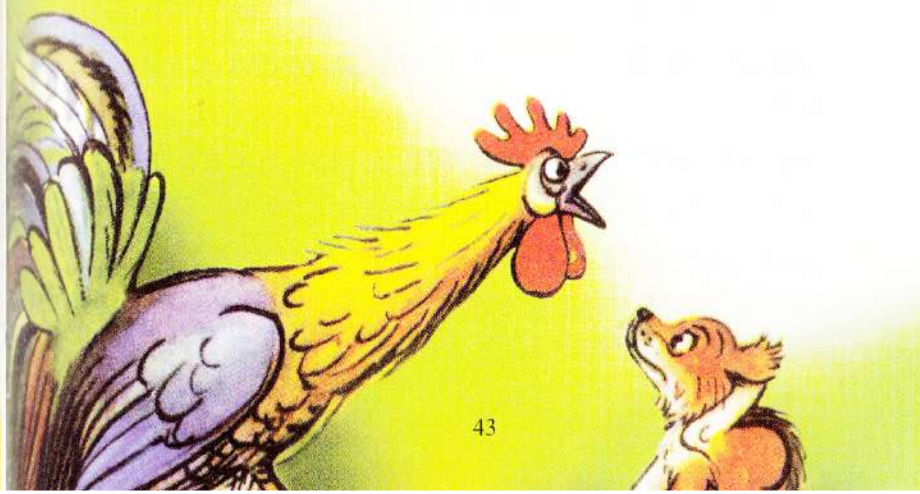


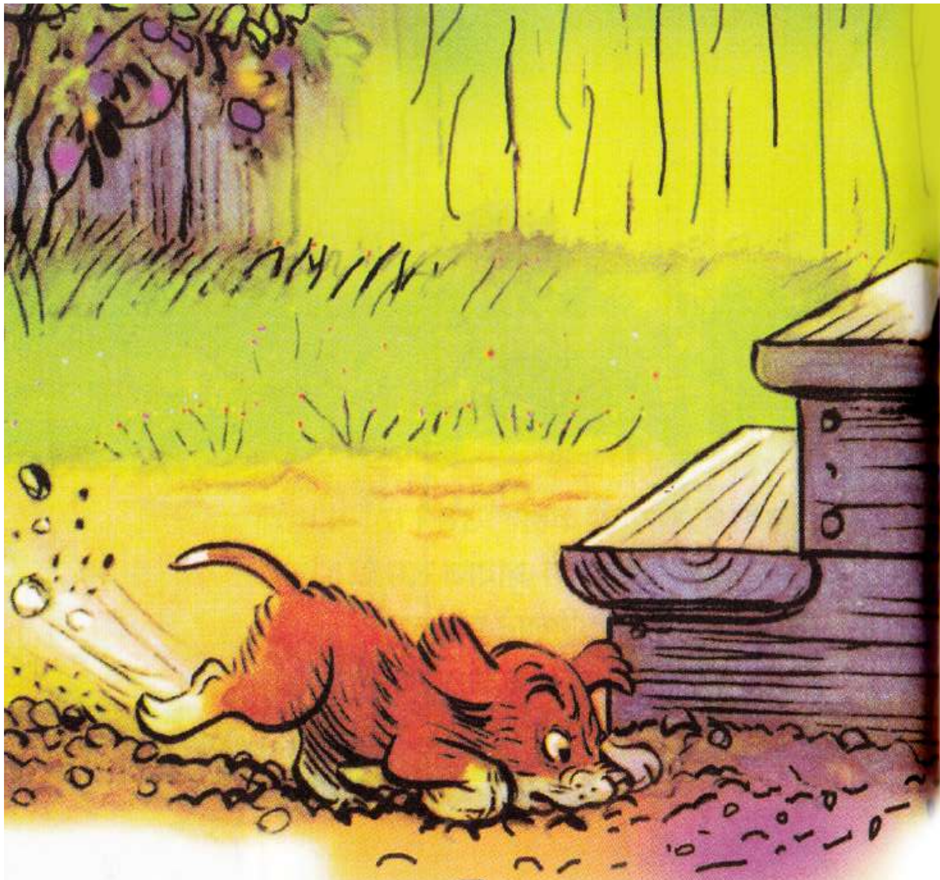


पिल्ला खिड़की के फलक पर चढ़ गया।
उसने आंगन में एक मुर्गे को देखा।
"मुर्गे ने म्याऊं आवाज निकाली होगी"
ऐसा सोचकर पिल्ला आंगन की और दौड़ पड़ा।



"तुमने क्या म्याऊं कहा?" उसने मुर्गे से पूछा।
"नहीं मैं कोका कोको आवाज लगाता हूं।"
मुर्गे ने अपना पंख हिलाते हुए कहा।
"क्या तुम कुछ और नहीं बोल सकते ?"
पिल्ले ने पूछा, "नहीं सिर्फ कोका कोको।"





पिल्ला अपने पिछले वाले पैर से कान को खुजलाते हुए घर की भीतर की ओर चल पड़ा।

अचानक घर के अग्रभाग से ही 'म्याऊं' आवाज सुनाई पड़ी।

"वह यहीं कहीं होगा", ऐसा स्वयं कहकर वह घर के अग्रभाग में चारों पैर से खरोदने लगा।

उसने जब अपने पैर से बड़ा गड्ढा खोदा तो उसके अंदर से धूसर रंग का एक चूहा बाहर निकल पड़ा।





"क्या तुमने म्याऊं कहां?" पिल्ले ने गुस्से से पूछा।

"पीपीपी! मैंने नहीं" चूहे ने कहा।

"लेकिन किस ने ऐसा कहा ?"

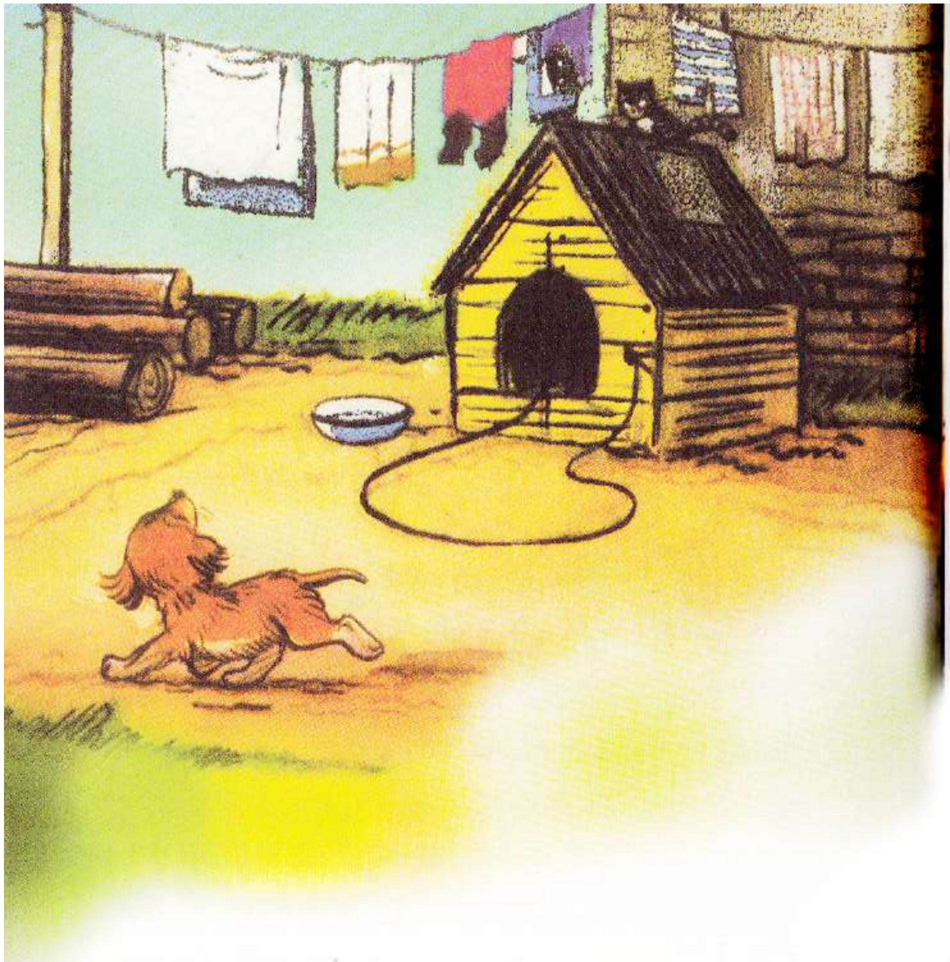
"किसी ने" पिल्ले ने जवाब दिया।

"क्या आवाज़ पास में से था ?" चूहे ने फिर से पूछा।

"बहुत पास"। पिल्ले ने कहा कि, "मुझे डर लग रहा है"।

रोते हुए चूहा घर के अग्रभाग के निचले तरफ की ओर दौड़ पड़ा।

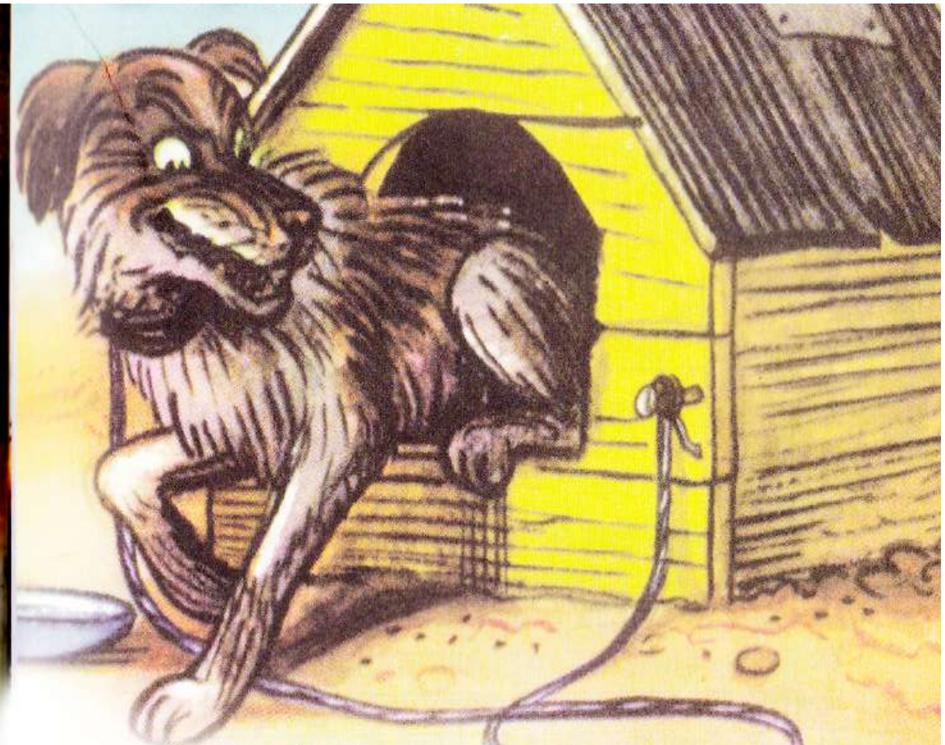




पिल्ला सोच में डूब गया। अचानक कुत्ते घर के पास से बहुत जोर से वही आवाज आई, "म्याऊं"।

वह तीन बार कुत्ते के घर के चक्कर लगाया। फिर भी कोई नजर में नहीं आया।

लेकिन कुत्ते के घर के अंदर से किसी के हिलने की आवाज आई। "मिल गया", पिल्ले ने खुद ही कहा।



"मैं अभी उसे पकड़ लूंगा", वह धीरे से कुत्ते के घर के पास पहुंचा। अचानक कुत्ते के घर से बड़ा भयानक कुत्ता बाहर आया और उसने भौंका,

"मुझे एक जानकारी चाहिए" पिल्ले ने कांपते हुए कहा।

"गररर..." कुत्ता फिर से भौंका।

"क्या तुमने म्याऊं कहां" ? अपने पूंछ को पैरों के नीचे छुपाते हुए डरकर पिल्ले ने फिर से पूछा।

"मैं ! क्या तुम पागल हो पिल्ले !" पिल्ला जोर से बगीचे की ओर दौड़ पड़ा और पौधों के बीच में छिप गया।



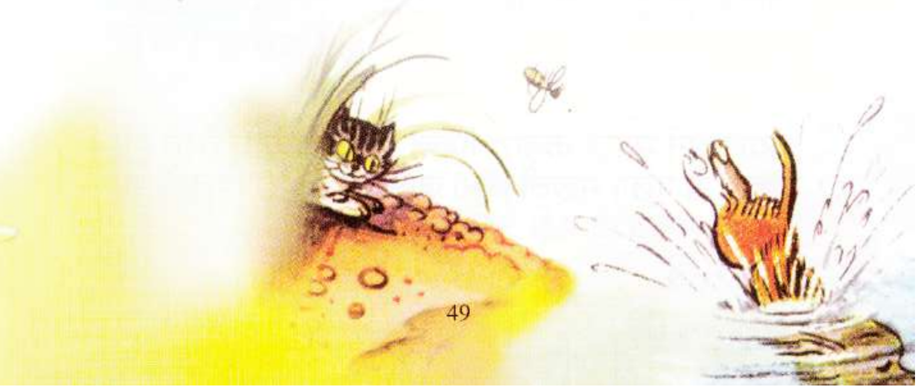


अचानक उसके सिर के ऊपर से किसी ने म्याऊं कहा। वह पौधों के बीच से निकलकर बाहर देखा। उसके सामने एक फूल पर एक मधुमक्खी बैठा था। "अरे यार इसी ने ही म्याऊं कहा होगा", ऐसा सोचकर पिल्ला उसे खाने के लिए कूद पड़ा। गुस्से में लाल होकर मधुमक्खी ने "स स स स..." आवाज करते हुए पिल्ले के नाक में जोर से काटा।





पिल्ला रोते हुए वहां से भाग गया। लेकिन मक्खी छोड़ने का नाम ही नहीं ले रही थी। "अभी मैं तुम्हें काट लूँगी"। ऐसा भिन्न-भिन्नाते हुए वह पिल्ले के पीछे उड़ पड़ी। पिल्ला तालाब की ओर दौड़ पड़ा और पानी में कूद गया। उसके पानी के ऊपर आने तक मक्खी वहां से चल पड़ी। फिर भी किसी ने कहा "म्याऊं"।





"क्या तुमने म्याऊं कहा?" पिल्ले ने उसके पास तैरते हुए मछली से पूछा। मछली बिना जवाब दिए पूंछ हिलाते हुए पानी में गायब हो गई।



"क्रोम, क्रोम" कमल के पत्ते पर बैठा एक मेंढक हंस पड़ा। "तुम्हें नहीं पता मछली बात नहीं करती।

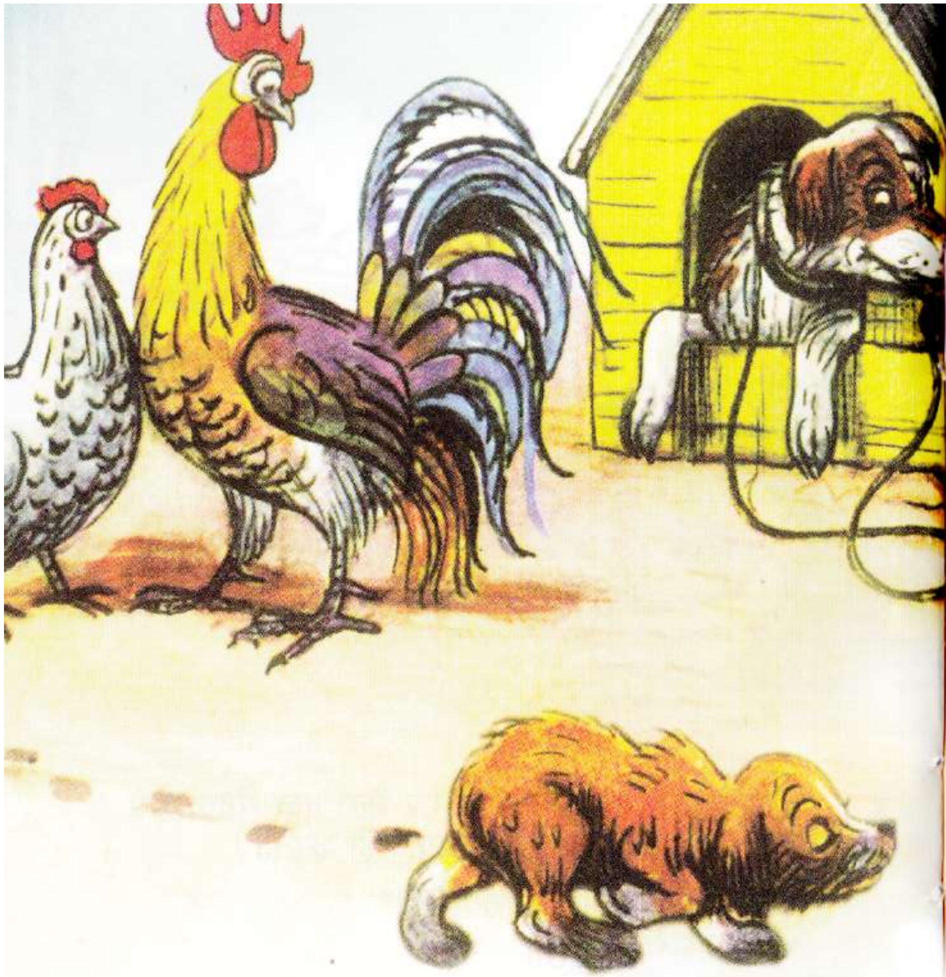
शायद तुमने ही म्याऊं कहा होगा।"

पिल्ले ने मेंढक से पूछा।

"क्रोम क्रोम" मेंढक फिर से हंस पड़ा

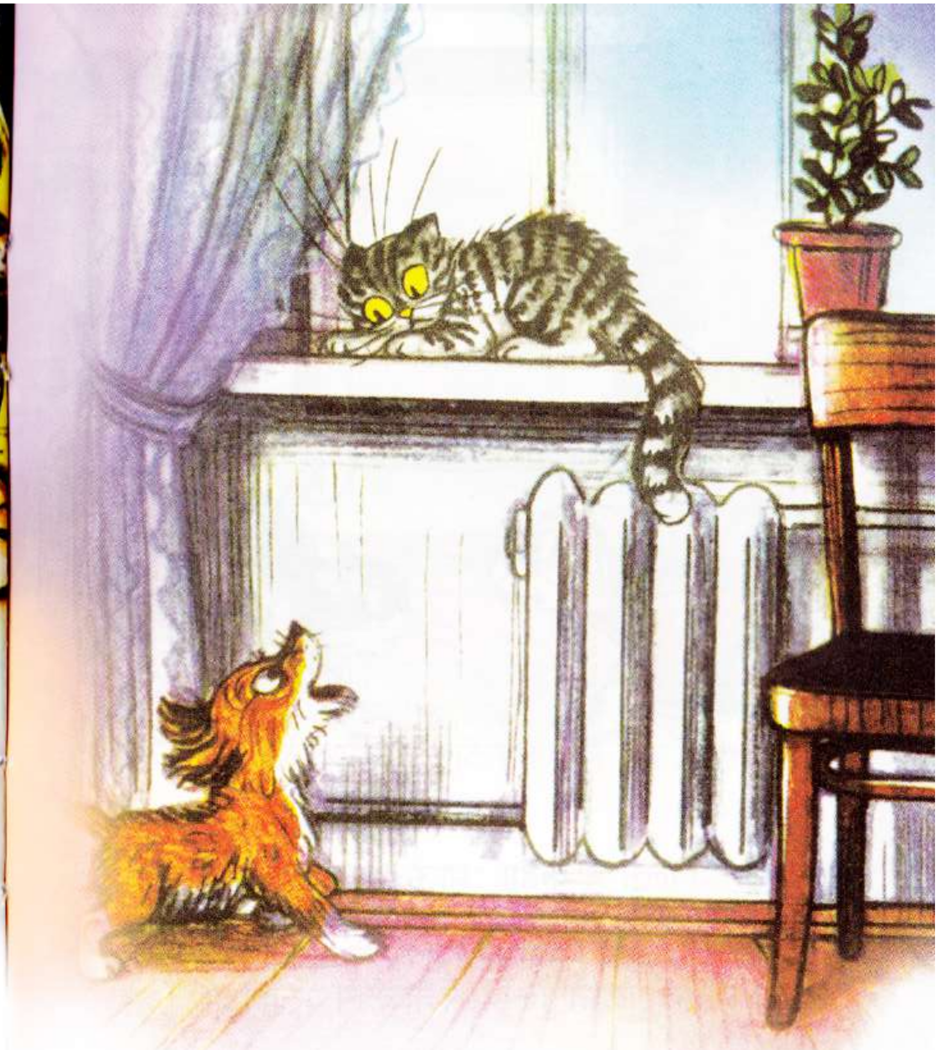
"तुम कैसे मुर्ख हो ? हम मेंढक लोग सिर्फ 'क्रोम' आवाज ही निकाल सकते हैं।"



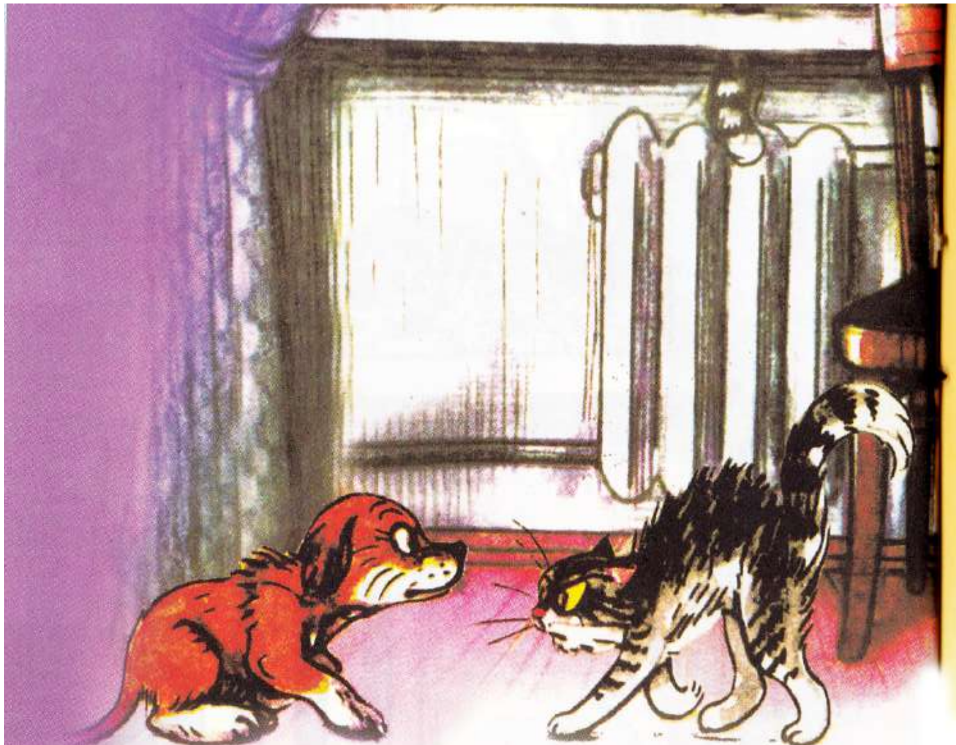


ऐसा कहकर वह पानी में कूद पड़ा। पूरी तरह भीगे हुए, फूले हुए नाक के साथ पिल्ला घर की और दौड़ पड़ा। बहुत दुखी होकर वो सोफे के पास के चारपाई पर लेट गया। अचानक फिर से वही आवाज आई "म्याऊं"।





पिल्ला जल्दी उठ खड़ा हुआ। वहां पर खिड़की के फलक पर मुलायम बालों वाला एक बिल्ली का बच्चा बैठा था।



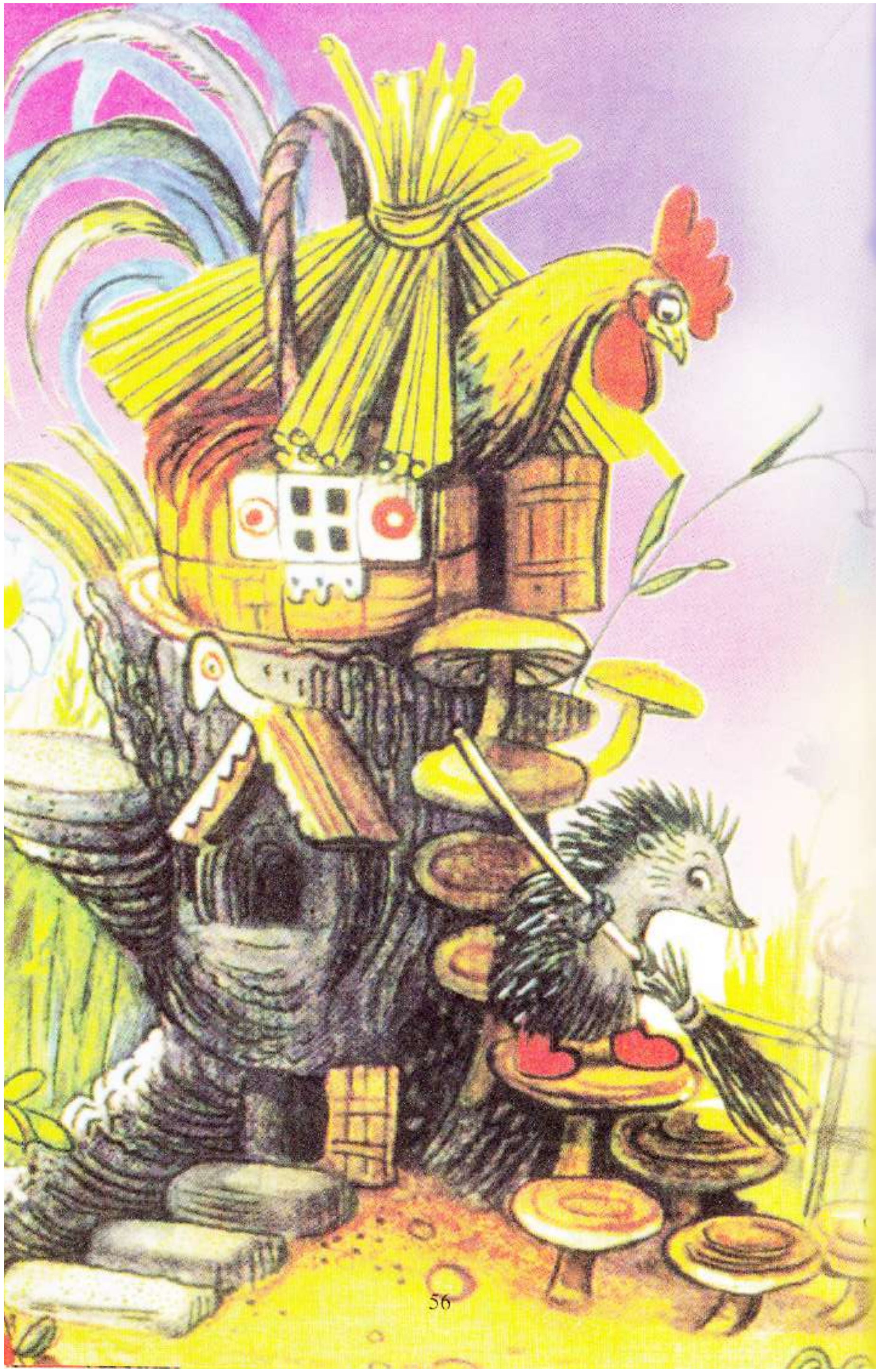
“म्याऊं”, बिल्ली ने कहा। “भाऊ भाऊ भाऊ” पिल्ला भौंक पड़ा। उसे तब कुत्ते की आवाज याद आई। वह भी “गररर...” आवाज निकाला। बिल्ली ने अपने शरीर को तीर की तरह झुकाते हुए पिल्ले के कान पर काटा।





उसके बाद बिल्ली खिड़की से बाहर की तरफ कूद पड़ी। पिल्ला अपनी चारपाई पर वापस जाकर सोने लगा। उसे अब पता चल गया था कि किसने कहा “म्याऊं”।







भिन्न-भिन्न आकार के पहिए





बहुत सालों पहले, एक मक्खी, एक मेढ़क, एक साही और एक मुर्गा पेड़ के तने के ऊपर के एक छोटे से घर में रहते थे।

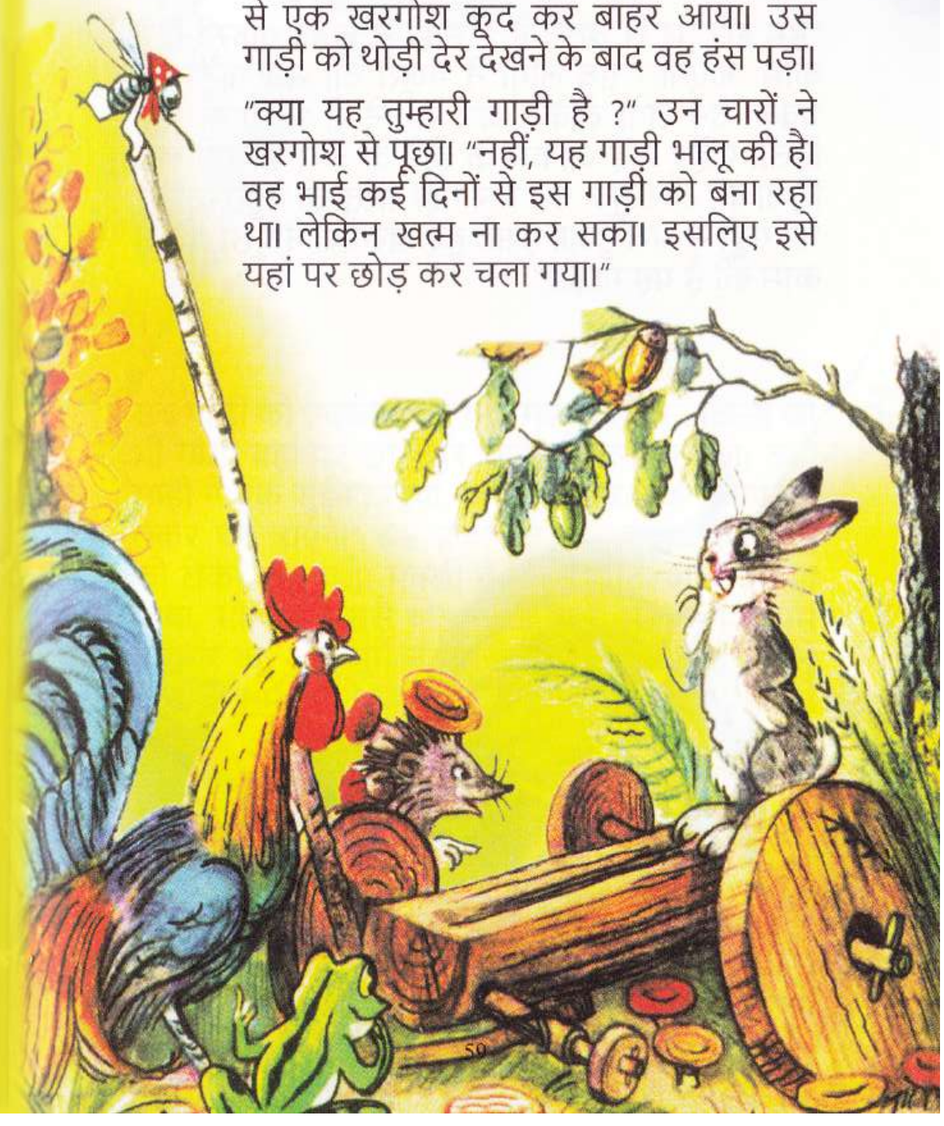
एक दिन वे फूल फल और कुकुरमुत्ते को लेने के लिए जंगल में चले गए। बहुत दूर जाने से वह लोग एक खुले हुए जगह में पहुंचे। वहां पर उन लोगों ने एक छोटी सी गाड़ी देखी। उस गाड़ी के चारों पहिए चारों आकार के थे। पहला वाला सबसे छोटा, दूसरा वाला थोड़ा और बड़ा, तीसरा वाला मध्यम प्रकार का और चौथा सबसे बड़ा।



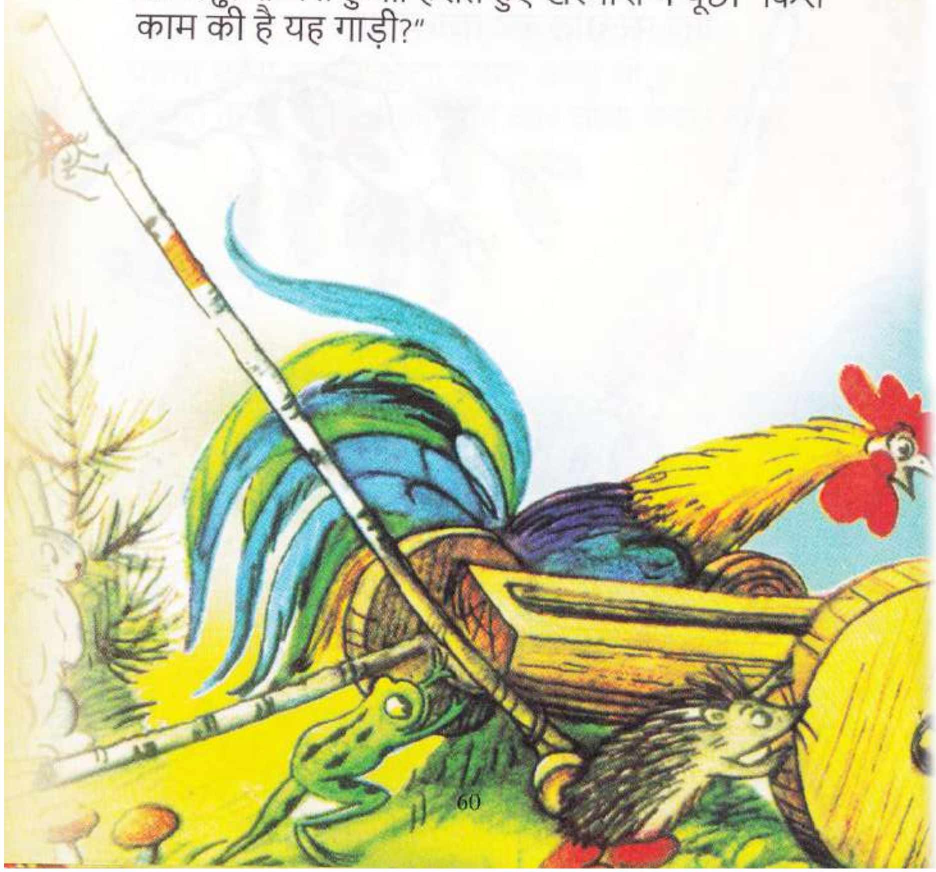
गाड़ी बहुत पहले से ही वहां पर खड़ी रही होगी, क्योंकि उसके नीचे बहुत सारे कुकुरमुत्ते फैले हुए थे।

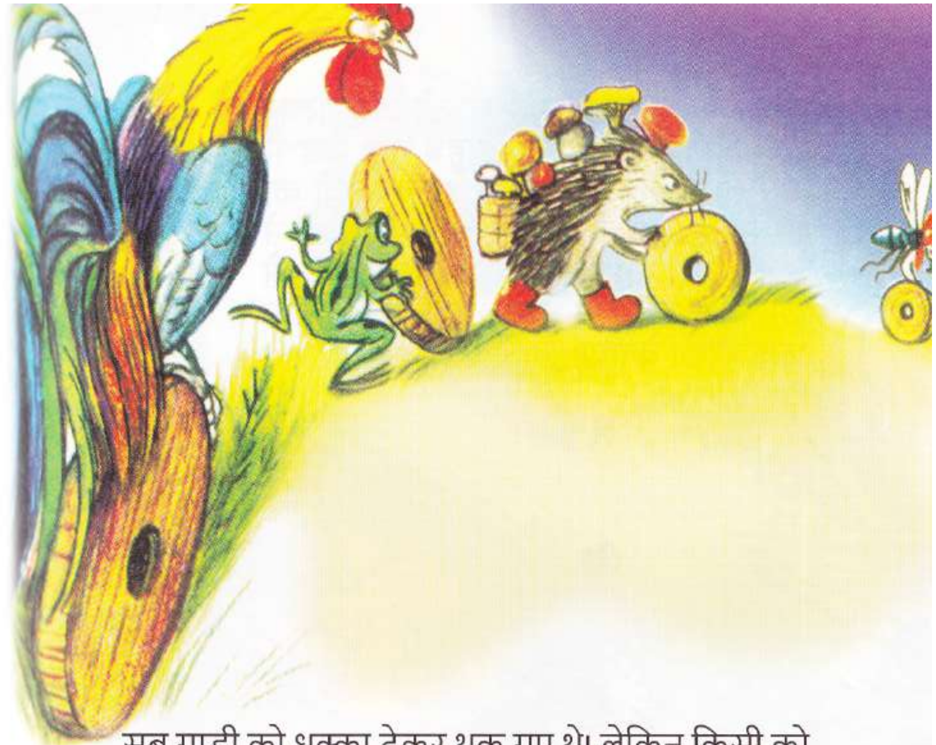
मेंढक, मक्खी, साही और मुर्गा बहुत ही आश्चर्य से गाड़ी को ही देखते रहे। उसी समय झाड़ियों से एक खरगोश कूद कर बाहर आया। उस गाड़ी को थोड़ी देर देखने के बाद वह हंस पड़ा।

"क्या यह तुम्हारी गाड़ी है ?" उन चारों ने खरगोश से पूछा। "नहीं, यह गाड़ी भालू की है। वह भाई कई दिनों से इस गाड़ी को बना रहा था। लेकिन खत्म ना कर सका। इसलिए इसे यहां पर छोड़ कर चला गया।"



"हम इसे घर ले चलते हैं, " साही ने कहा। "किसी दिन काम आएगा"। सब लोगों ने मंजूरी दी। सब गाड़ी को धक्का देने लगे। लेकिन जोर लगाने से भी गाड़ी नहीं हिली। पहिए कई आकार के होने के कारण गाड़ी एक दिशा की ओर झुक कर गिर गई। रास्ता तो बहुत कठिन था। गड्ढों से भरा हुआ। हंसते हुए खरगोश ने पूछा "किस काम की है यह गाड़ी?"





सब गाड़ी को धक्का देकर थक गए थे। लेकिन किसी को भी गाड़ी वहां पर छोड़कर जाने का मन नहीं था। तभी साही ने एक सुझाव दिया, "हम सब एक एक पहिए को लेकर घर जाएंगे।" इस प्रकार वे लोग एक एक पहिए को लेकर चल पड़े। मक्खी ने सबसे छोटा वाला पहिया लिया, साही ने उससे थोड़ा और बड़ा, मेंढक ने मध्यम आकार का और मुर्गे ने सबसे बड़ा वाला लिया। मुर्गे ने बीच-बीच में अपने पंखों को हिलाते हुए जोर से आवाज निकाला और कहा, "को—का—को—को"। खरगोश उनको देखकर मुस्कुराया, "बेवकूफ ! कई आकार के पहिए घर ले जा रहे हैं"।





मुर्गा, मेंढक, साही और मक्खी कई प्रकार के पहियों को लेकर घर पहुंच गए। बाद में सब लोग सोच में पड़ गए, "इन पहियों का इस्तेमाल कैसे किया जाए" ? तभी मक्खी ने कहा, "मुझे यह मालूम है "। मक्खी ने सबसे छोटे वाले पहिए से धागों की सिलाई के लिए एक चरखा बनाया।

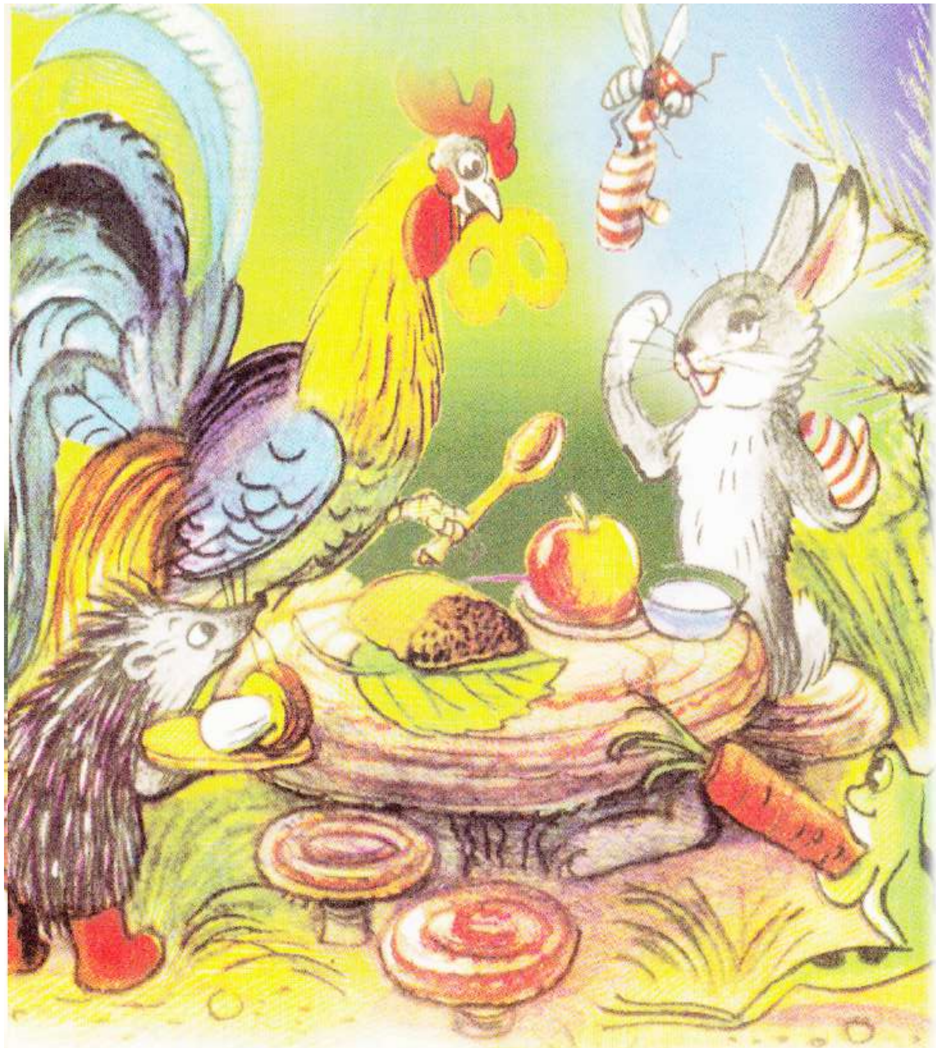


साही ने दो लंबे लकड़ियों को अपने पहिए से बांधकर उससे एक गाड़ी बनाई, "मुझे भी एक तरकीब सूझ रही है"। मेंढक ने अपने थोड़े बड़े वाले पहिए को कुएं के ऊपर बांध दिया और उसकी सहायता से उसने बड़ी आसानी से कुए, से पानी निकाला। मुर्गे ने अपना बड़ा वाला पहिया एक तालाब में लगाया और उससे चावल के आटे को पीसने की एक चक्की बनाई। इस प्रकार सभी पहिए काम आए। साही ने दो लंबे लकड़ियों को अपने पहिए से बांधकर उससे एक गाड़ी बनाई, "मुझे भी एक तरकीब सूझ रही है"।





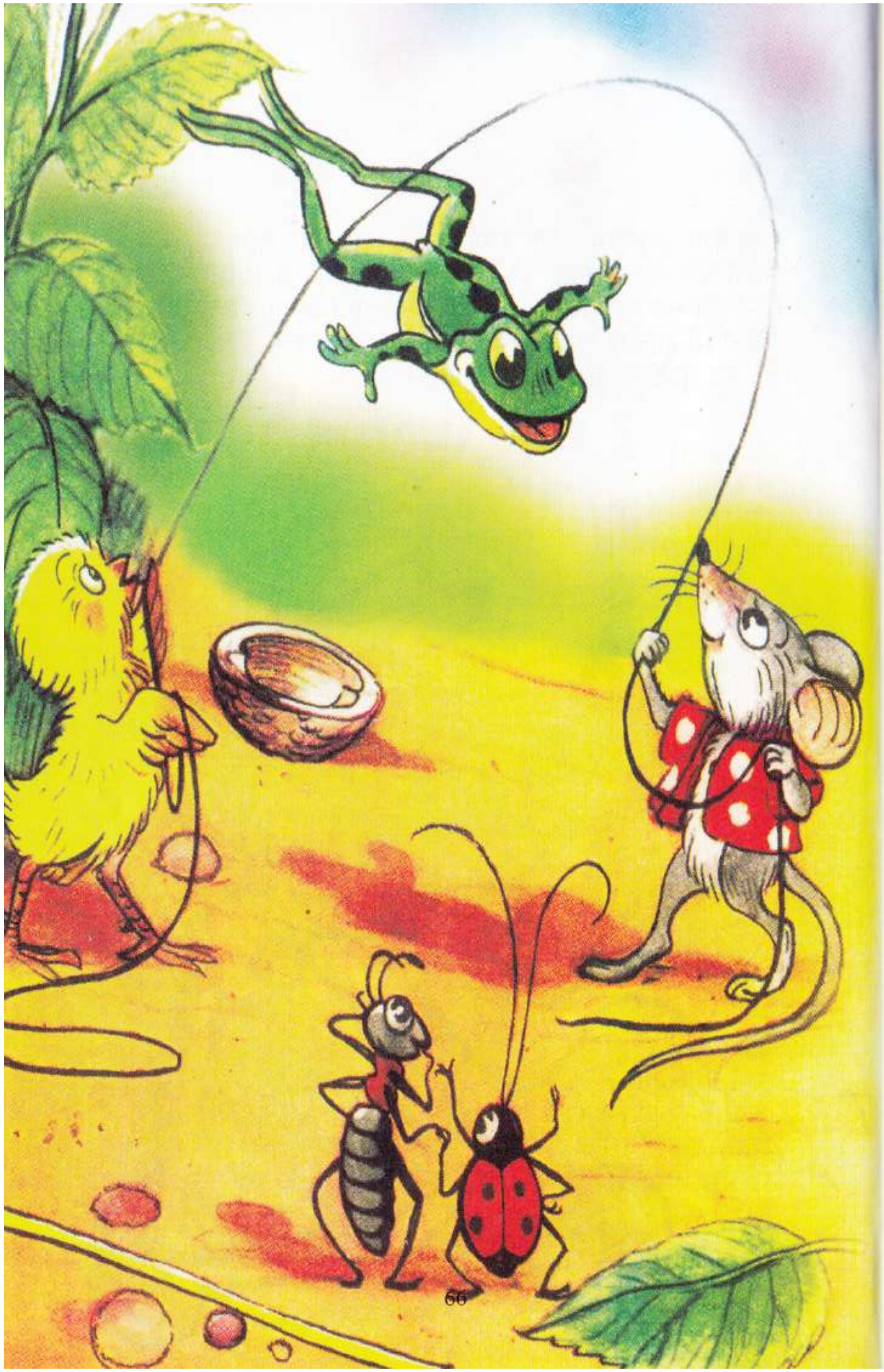
मेंढक ने अपने थोड़े बड़े वाले पहिए को कुएं के ऊपर बांध दिया और उसकी सहायता से उसने बड़ी आसानी से कुए, से पानी निकाला। मुर्गे ने अपना बड़ा वाला पहिया एक तालाब में लगाया और उससे चावल के आटे को पीसने की एक चक्की बनाई। इस प्रकार सभी पहिए काम आए।



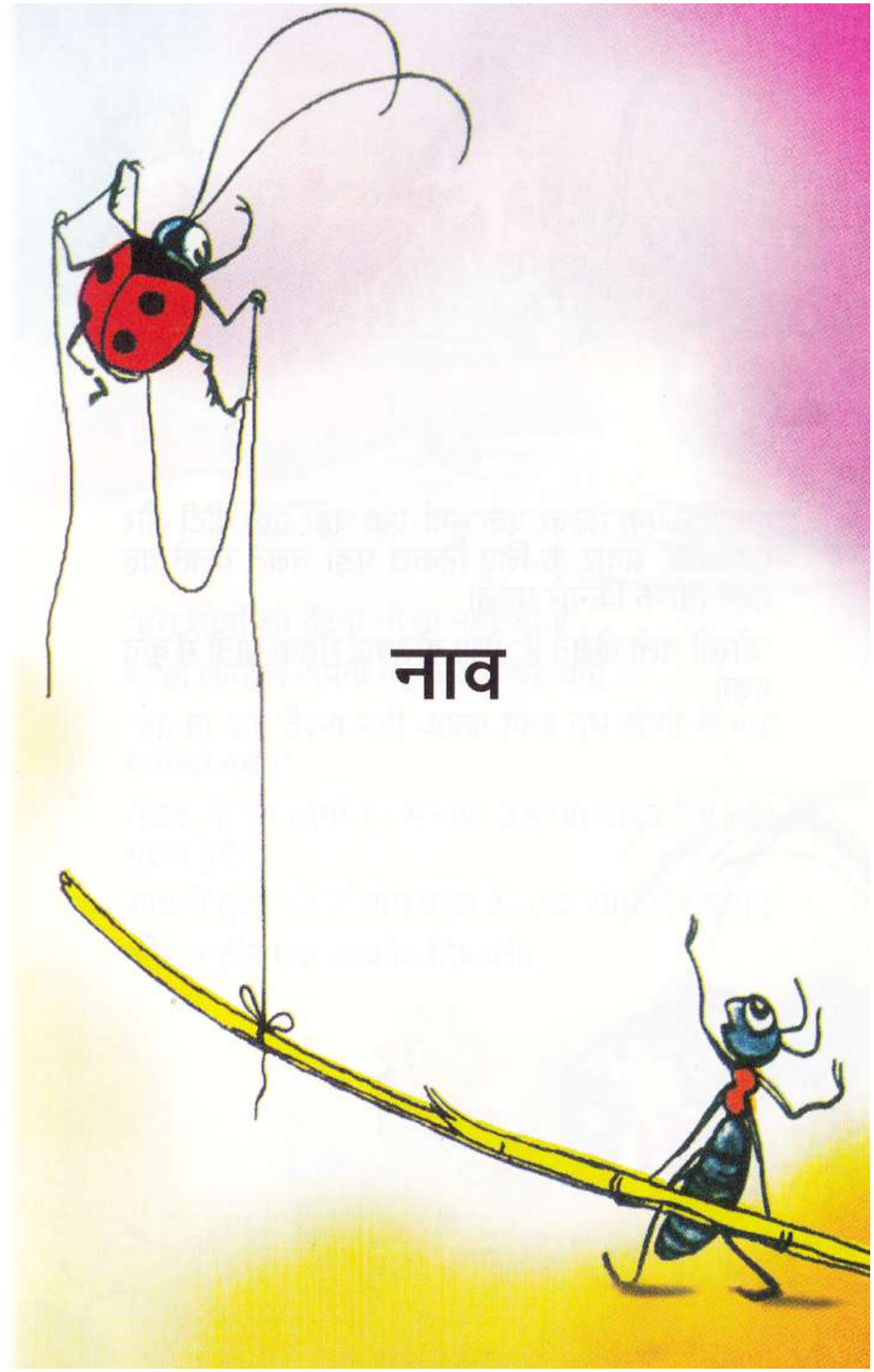
मक्खी ने धागे बुनकर कपड़े बनाए; मेंढक ने बगीचे के लिए कुए से पानी निकाला ; और साही जंगल से अपने गाड़ी में फल, फूल और कुकुरमुत्ता लाएं। मुर्गे ने चावल को पीसकर तैयार किया। इन सब का हाल जानने के लिए एक दिन खरगोश वहां पर आया। अपने पुराने दोस्त से मिलकर वे सब खुश हो गए। मक्खी ने खरगोश को दसत्ताने दिए। मेंढक बगीचे का एक फल, साही

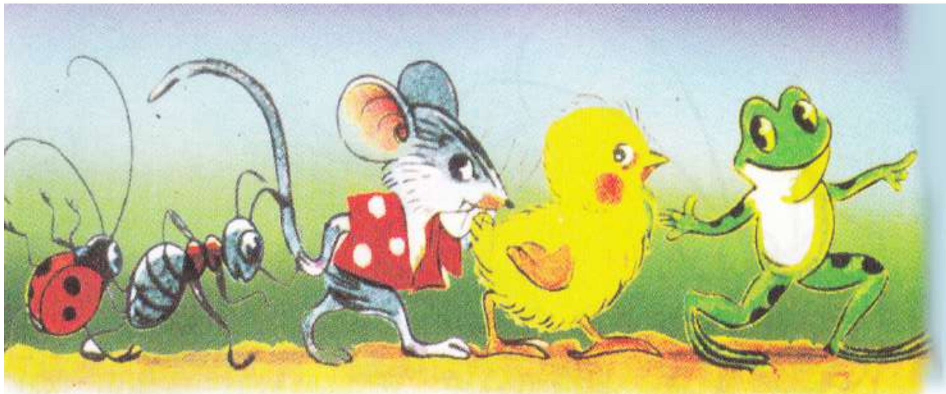
एक बड़ा कुकुरमुत्ता और मुर्गा अप्पम और खीर लाया। खरगोश ने लज्जित होकर कहा, "मुझे माफ कर दो, मेरे भाइयों। मैंने उस दिन तुम सब का मजाक उड़ाया। जिन लोगों के पास बुद्धि हो, वे किसी भी आकार के पहिए का इस्तेमाल ठीक तरह से कर सकते हैं। अब मुझे यह बात समझ में आई"।





नाव





एक दिन एक मेंढक, एक मुर्गा, एक चूहा, एक चींटी और एक कीट सवार के लिए निकल पड़े। चलते चलते वह एक नदी के किनारे पहुंचे।

"दोस्तों चलो खेलते हैं" ऐसा बोलकर मेंढक पानी में कूद पड़ा।





"हम लोगों को तैरना भी तो नहीं आता",

बाकी लोगों ने अपनी नामंजूरी प्रकट की।

"हा, हा, हा! तैरना नहीं आता। फिर तुम लोगों से क्या फायदा तब ?"

मेंढक ने उन लोगों का मजाक उड़ाया। बाकी सब लोग गुस्सा हुए,

साथ में दुखी भी। वे लोग बहुत देर तक सोच में डूब गए,

और उन्होंने एक तरकीब निकाली।





मुर्गे ने जाकर एक पत्ता लाया।



चूहे ने एक काजू का छिलका उठा कर लाया।



चींटी ने एक खास का टुकड़ा लाया।

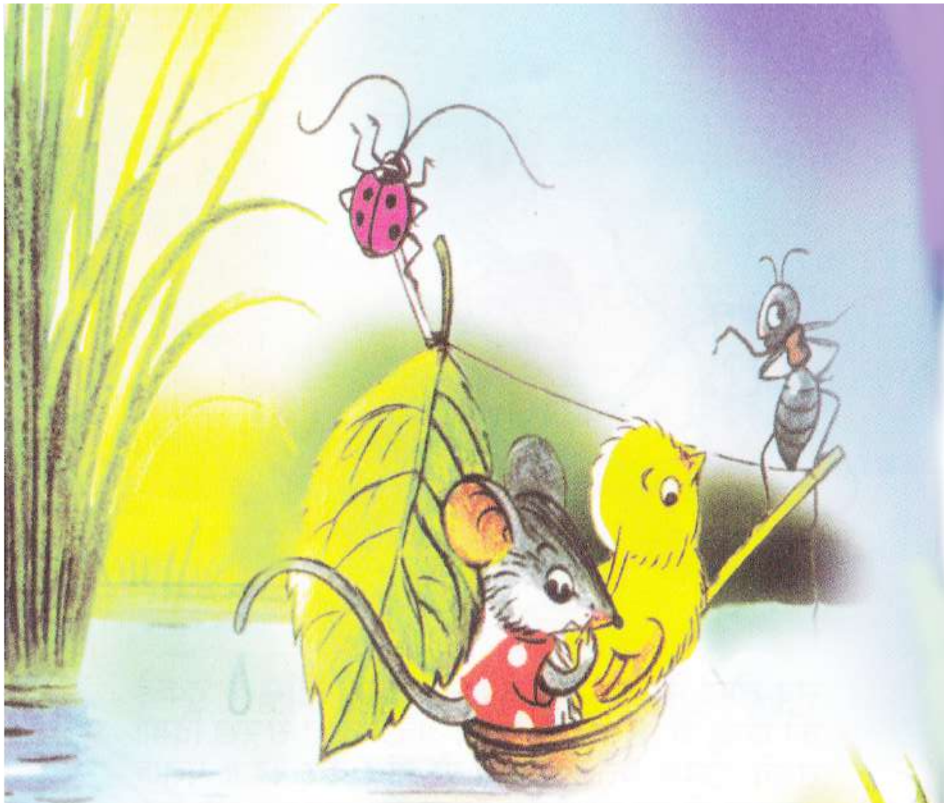


कीट ने एक लंबा वाला धागा लाया।



सब लोगों ने काम करना शुरू किया। खास के टुकड़े को काजू के छिलके के अंदर अच्छी तरह से रख दिया। उसके ऊपर पत्ते को धागे से बांध कर रखा। पलक झपकते ही उन लोगों ने बहुत ही सुंदर सा एक छोटा सा नाव बनाया।





उन लोगों ने नाव को धक्का देकर पानी में उतारा।





सब लोग उसमें चढ़कर रवाना हुए। मेंढक ने पानी के ऊपर उठकर एक बार फिर उनकी मजाक उठाने की कोशिश की। तब तक वे लोग नाव में बहुत दूर जा चुके थे।





जादू की छड़ी



एक दिन एक साही अपने घर जा रहा था। रास्ते में एक खरगोश उसके साथ जुड़ गया। अगर राह में किसी का साथ मिले तो आधे समय में ही मंजिल पहुंच सकते हैं।

घर का रास्ता बहुत लंबा था। बात करते-करते वे लोग चलने लगे।

रास्ते के बीच में पड़ी हुई एक छड़ी पर उनकी नजर पड़ी। वार्तालाप में मग्न खरगोश को छड़ी दिखाई नहीं पड़ी। वह छड़ी से टकराकर गिरने लगा।

"अरे यार", खरगोश को गुस्सा आया। उसने लकड़ी को लात मारी। लकड़ी बहुत दूर जाकर गिर गई। साही ने उस छड़ी को लेकर अपने कंधे पर रखा। इस चक्कर में साही से खरगोश का साथ छूट गया। वह भागकर खरगोश के पास पहुंचा। खरगोश हैरान रह गया "तुमने छड़ी ले ली ? किस लिए ? तुम्हें इसकी क्या जरूरत है ? "

"यह ऐसी वैसी छड़ी नहीं है। यह एक जादू की छड़ी है।" खरगोश को हंसी आई।



चलते चलते वे दोनों एक झरने के पास पहुंचे। खरगोश तो एक ही छलांग में दूसरी ओर पहुंच गया। उस पार से खरगोश बहुत जोर से बोला,

"अरे भाई साही, तुम अपना छड़ी दूर फेंक दो। उसे लेकर इस पार आने में तुम्हें दिक्कत होगी।" साही कुछ नहीं बोला।





वह थोड़ी दूर पीछे की तरफ गया और तेजी से आगे आकर छड़ी को झरने के बीच में रखकर उसने एक छलांग लगाई। लो वह भी दूसरी ओर पहुंच गया, खरगोश के बिल्कुल पास। खरगोश को अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हुआ, "अरे भाई, तुम बहुत ऊंचे में कूद सकते हो !"



"नहीं भाई, मुझे कहां कूदना आता है ? यह तो सब जादू की छड़ी का कमाल है।" साही ने कहा।

वह लोग फिर चलने लगे। कुछ देर बाद वह एक जगह पहुंचे जहां की मिट्टी गीली थी। बीच-बीच में सूखी हुई जमीन थी। उसी किनारे से खरगोश कूद कूद कर आगे चलने लगा। हाथ के जादुई छड़ी से रास्ते को तलाशते और नापते हुए साही पीछे पीछे चल रहा था।





"अरे ओ साही, तुम क्यों ऐसे रेंगते हुए आ रहे हो ? शायद तुम्हारी छड़ी," बात पूरी होने से पहले खरगोश फिसलकर मेले पानी में गिर गया। उसके कान तक पूरा वह डूब गया। अगर कुछ देर और बीत जाता तो वह मर ही जाता।

साही खरगोश के पास आकर जादुई छड़ी को आगे करते हुए जोर से बोला, " इसको पकड़ो जोर से पकड़ो।" खरगोश ने छड़ी को पकड़ा। साही ने अपनी पूरी ताकत जुटाकर छड़ी संघ खरगोश को खींचा और मेले पानी से बाहर निकाल कर किनारे पर लाया।



खरगोश ने साही का एहसान जताते हुए कहा, "तुमने मेरी जान बचाई। तुम्हारा धन्यवाद।

"ओ! मैंने क्या किया ? इस छड़ी ने तुम्हें बचाया है।" ऐसा कहकर साही आगे चल पड़ा। चलते चलते वे दोनों इस बार एक घने जंगल के पास पहुंचे। उन्होंने रोती हुई एक छोटी सी चिड़िया को देखा जो अपने घोसले से नीचे गिर पड़ी थी। उस चिड़िया के माता-पिता उसके इर्द-गिर्द बड़ी असमंजस में उड़ रहे थे।







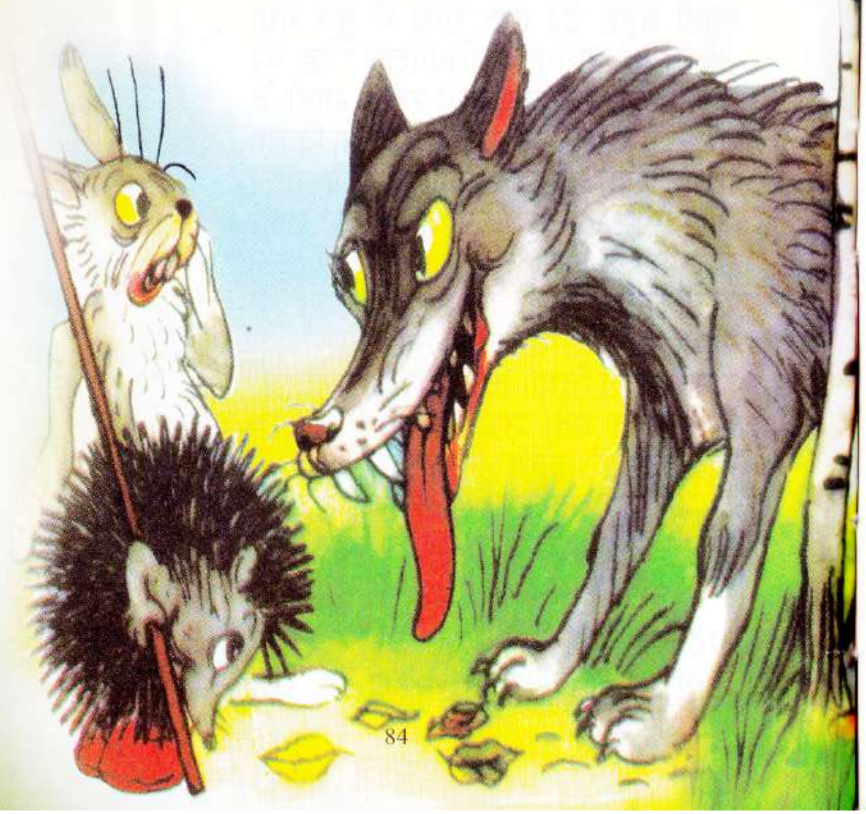


"कोई हमें बचाओ, कोई हमें बचाओ", वे दोनों विनती कर रहे थे। चिड़िया का घोंसला बहुत ही ऊपर था। खरगोश और साही, दोनों उसकी मदद करना चाहते थे। लेकिन आदत के शिकार, उनको पेड़ में चढ़ना नहीं आता था।

साही बहुत देर तक सोच में डूब गया और एक उपाय भी निकाला। "पेड़ पर अपना मुंह रख कर खड़े रहो।" साही के कहने पर खरगोश ने तुरंत ही ऐसा किया। चिड़िया को छड़ी के एक तरफ बिठाकर और छड़ी को कसकर पकड़ कर साही खरगोश के सिर के ऊपर चढ़ गया। वहां खड़े रहकर छड़ी को ऊपर उठाते हुए साही ने चिड़िया को उसके घोसले के पास पहुंचा दिया। चिड़िया अपने घोसले में निकल गई। उसके माता-पिता के खुशी का ठिकाना ही नहीं था। वे दोनों अपनी खुशी का इजहार करते हुए साही और खरगोश के चारों तरफ उड़ने लगे, "धन्यवाद, धन्यवाद।"

खरगोश ने साही से कहा, "बढ़िया, तुमने ठीक रास्ता चुना।"

इस बार भी साही ने कहा, "अरे मैं नहीं, इस जादू की छड़ी ने ही यह काम आसान किया है।" वे दोनों जंगल में घुस गए। आगे बढ़ते ही घना अंधेरा छाने लगा। जंगल में घने हुए पेड़ थे। खरगोश बेचारा डर गया लेकिन साही अपने छड़ी से पेड़ की डालियों को हटाते हुए आगे चल पड़ा। अचानक एक भेड़िया उनके सामने कूद पड़ा। उसने रास्ता ठोकते हुए चिल्लाया, "रुको वहां।" साही और खरगोश रुक गए थे। भेड़िया अपने जीभ से मुंह को चाटते हुए कहा, "अरे साही मैं तुम्हें नहीं मारूंगा तुम्हारे बदन पर कांटे हैं। लेकिन खरगोश का शरीर तो मुलायम है। इसलिए मैं एक दम से खरगोश को निगल जाऊंगा। खरगोश डर के मारे बर्फ की तरह सफेद





हो गया।पैर तो आगे चलने का नाम ही ना ले रहे थे। दौड़कर बचने की बात तो दूर की थी। उसने सोचा कि उसकी किस्मत पर यही लिखा है, भेड़िया उसे खा जाएगा। ऐसा सोचकर वह आंखें मूंदकर खड़ा रहा। लेकिन साही ने हिम्मत न हारी।

उसने छड़ी से भेड़िए के पीठ पर एक लात मारी। दर्द के मारे, भेड़िया रोते हुए वहां से दौड़ गया। पीछे मुड़कर देखने की भी हिम्मत उस पर नहीं थी।

"धन्यवाद साही। तुमने मुझे उस भेड़िए से बचाया।" खरगोश को अब सांस लेने की फुर्सत मिली। "अरे मैंने क्या किया, इस छड़ी ने तुम्हारी जान बचाई है।" खरगोश ने जवाब दिया।



वे लोग फिर चल पड़े। चलते चलते जंगल के उस पार एक गांव के रास्ते पहुंच गए। लेकिन रास्ता एक सीधी ढ़ाल के समान ऊपर की ओर जाने वाला था। साही अपने छड़ी के सहारे चलने लगा। खरगोश बेचारा बहुत ही थक गया। घर के नजदीक होने पर भी वह एक भी कदम आगे रख नहीं पा रहा था। "कोई बात नहीं तुम इस छड़ी को पकड़ लो", साही ने सहारा दिया। खरगोश ने छड़ी के एक तरफ पकड़कर ऊंचाई को चढ़ने की कोशिश की। साही उस छड़ी को खींचते हुए आगे चल रहा था। इस बार खरगोश को दिक्कत ज्यादा नहीं हुई। "देखो इस बार तुम्हारी छड़ी ने हीं मेरी मदद की," खरगोश ने साही से कहा। साही के सहारे खरगोश घर पहुंचा। उसके बीवी बच्चे उसकी राह देख रहे थे।सब लोग खुश हो गए।



"अगर तुम्हारी यह जादुई छड़ी साथ ना होती तो मैं कभी भी घर ना पहुंच पाता," खरगोश ने साही से कहा। साही ने हंसते हुए कहा, "तुम ले लो यह छड़ी। मेरा उपहार समझो। शायद यह तुम्हारे और काम आ जाए।" खरगोश हैरान हुआ। "इस जादुई छड़ी के बिना तुम कैसे रहोगे ?"

"कोई बात नहीं।" साही बोला। "एक छड़ी खोजना, कौन सी बड़ी बात है ? जादू तो यहां है।" अपने माथे को छूते हुए साही ने खरगोश को हौसला दिया। खरगोश समझ गया।

"तुम्हारी बात सही है। छड़ी नहीं, हमारे पास दिमाग और दूसरों पर दया आने वाला एक दिल होना चाहिए।





सेब का फल



पतझड़ का मौसम खत्म होने को आ रहा था। कब से पेड़ों की डालियों से पत्ते झड़ चुके थे। सिर्फ एक सेब का फल उसके पेड़ के ऊपर लटक रहा था। जंगल से होकर दौड़ती हुई आई एक खरगोश ने उसे देखा।

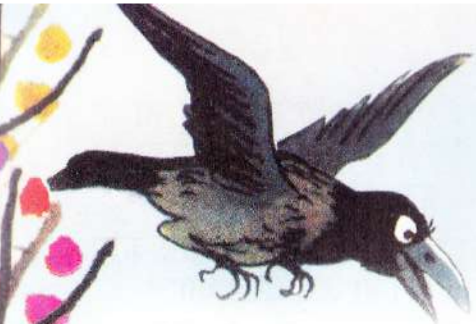
"उसे कैसे हासिल करें ? वह बहुत ऊंचाई में है। अगर कूद जाऊं तो भी पा नहीं सकूंगा।"

"का-का" खरगोश ने ऊपर पाइन के पेड़ में एक कौव्वे को रोता हुआ देखा।



"अरे कौव्वे, क्या तुम मुझे वह सेब तोड़कर दोगे ?" खरगोश ने पूछा। कौव्वे ने उठकर उस सेब को अपनी चोंच से हल्के से मारा। लेकिन कौव्वे का चोंच छोटा था और सेब बड़ा। इसलिए कौव्वे के चोंच में समाए बिना वह नीचे गिर पड़ा।





"शुक्रिया मेरे यार।" खरगोश ने अपनी खुशी जताई और सेब को लेने के लिए झुका ही ना था, अचानक वह सेब आवाज निकाल कर एक जीवित वस्तु की तरह एक छलांग मारा। "यह क्या बात है?" खरगोश को पहले डर लगा। दूसरी बार उसे समझ आया कि वह सेब पेड़ के नीचे सोने वाले एक साही के ऊपर जा गिरा था। साही झटका लगने से नींद में से उठ गया और उसके पीठ पर छुभे हुए सेब से दौड़ने लगा।



"रुको रुको, मेरे सेब को लेकर कहां दौड़ रहे हो ?" खरगोश को गुस्सा आया। साही रुक गया। "यह मेरा सेब है, जब यह गिरा तो मैंने ही इस को पकड़ा है।"

खरगोश साही के पास कूदकर आ पहुंचा। उसने कहा "जल्दी मुझे मेरा सेब दे दो। मैंने ही उसे देखा था।"

"तुम बेवजह झगड़ रहे हो। यह मेरा सेब है। मैंने उसे अपने लिए तोड़ा था", कौआ भी पीछे हटने के लिए तैयार न था । वे लोग असमंजस में पड़ गए। कोई भी फैसला नहीं कर सकता था। सब ने जोर से कहा, "यह मेरा सेब है।" उन लोगों की आवाज और शोर जंगल में गूंज रही थी। वे लोग झगड़ा करने लगे। कौव्वे ने साही के नाक पर चोच मारी।





साही अपने कांटों का इस्तेमाल करके खरगोश को घायल करने की कोशिश की। खरगोश ने तो कौव्वे को एक लात मारी।

उसी समय वहां एक भालू आ पहुंचा। "यह क्या हो रहा है ? क्यों इतना शोर मचा रहे हो ?" सब ने भालू को देखा, "भालू मामा, इस जंगल में सबसे अधिक बुद्धिमान और ताकतवर आप ही हैं। हम क्या करें? आप जो भी कहेंगे वह बात सर आंखों पर। इस सेब का असली हकदार कौन है ?" उन्होंने सारी बात भालू को बताई।

भालू बहुत देर तक सोच में डूब गया। उसने सिर को खुजलाते हुए अंत में पूछा, "किसने सबसे पहले सेब को देखा?"

"मैंने", खरगोश ने जवाब दिया।

"किसने सेब तोड़ा?"

"मैंने", कौव्वे ने कहा।

"ठीक है।"

"किसने सेब को पकड़ा ?"

"मैंने पकड़ा।" साही ने कहा।





भालू ने अपना फैसला सुनाया, "सब कुछ मालूम पड़ गया। तुम सब लोगों ने जो कहा वह सही बात है।इसलिए तुम सब लोग सेब के हकदार हो। लेकिन यहां पर तो सिर्फ एक ही सेब है।" सब लोग हैरान हो गए।

"तब तो सेब का बंटवारा होगा। सबको एक-एक हिस्सा मिलेगा।"

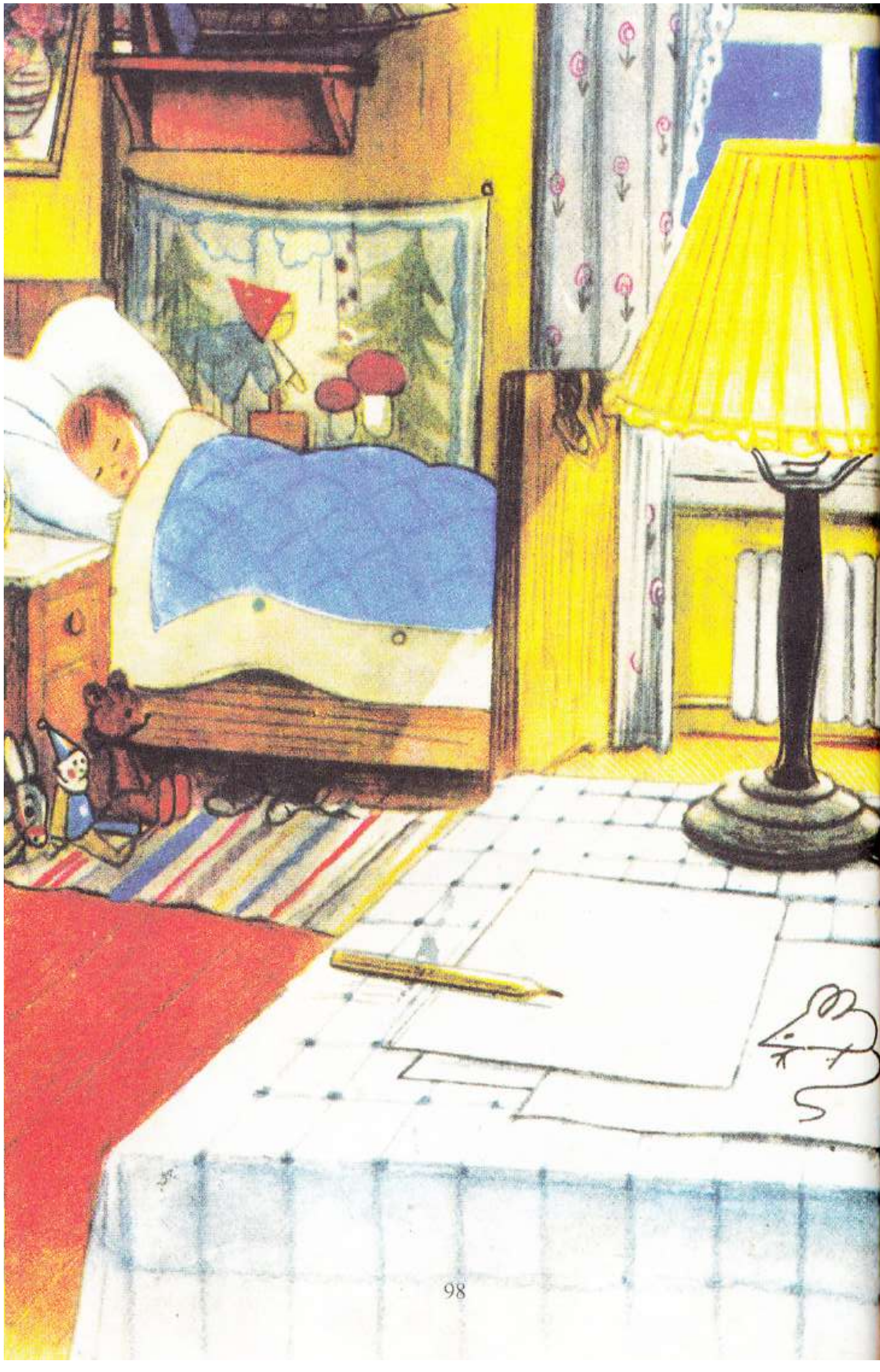
यह बात हमें पहले क्यों नहीं सूझा।। सब चकित हो गए।



साही ने सेब के चार टुकड़े किए। एक हिस्सा खरगोश को दिया गया,"यह तुम्हारा है तुम् ने पहले सेब को देखा था।" दूसरा हिस्सा कौव्वे को दिया, "कौव्वे भाई, तुम ही ने तो उसे तोड़ा था।" तीसरा हिस्सा साही ने खा लिया, "यह मेरा है। मैंने ही सेब को पकड़ा था।" चौथा हिस्सा उसने भालू को दे दिया, "भालू मामा, यह आपका है।" भालू हैरान हुआ। "मुझे ! मैंने क्या किया ?"

"आप ही ने हमें झगड़ा करने से और मूर्ख बनने से रोका।" सब लोग सेब खाए और खुश हो गए।

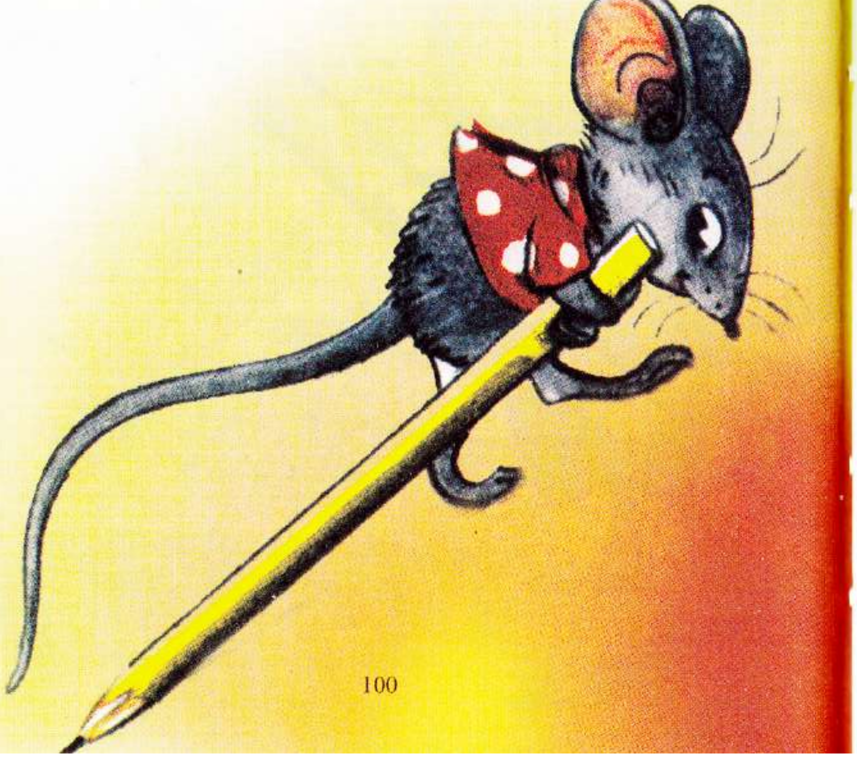




चूहा और पेंसिल



वोवा नाम का एक लड़का था। वह जिस पास[illegible] पढ़ाई करता था उसे बहुत पसंद करता था। हर रोज उसे अप[illegible] पास ही रखता था। एक दिन अपने पेंसिल को मैज के ऊपर रखकर वह सो गया। उसी रात वहां एक चूहा आया और मैज के ऊपर चढ़कर उस पेंसिल को चुरा कर ले गया। चूहा उसे खींच कर अपने बिल को रवाना हुआ।

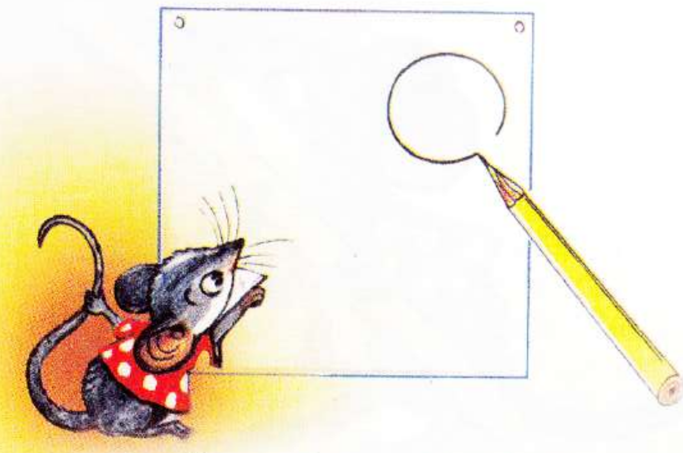




"मुझे छोड़ दो।" पेंसिल ने विनती कि, " मैं तुम्हारे कोई भी काम नहीं आ सकता। मैं सिर्फ एक लकड़ी का टुकड़ा हूं। तुम खा भी नहीं सकते। "मैं तुम्हें काट डालूंगा। मुझे मेरी दांतों की तेज धार के लिए हमेशा किसी चीज को काटना पड़ता है।" ऐसा कहकर चूहे ने पेंसिल को काटा।

"अरे तुम मुझे दर्द दे रहे हो।" पेंसिल ने फिर से अपनी बात चूहे के सामने रखी। "मेरी एक अंतिम इच्छा है। कृपया तुम उसको पूरा करो। मैं अपनी इच्छा से कुछ लकीरें खींच कर एक चित्र बनाना चाहता हूं। उसके बाद तुम मेरा कुछ भी करो।"



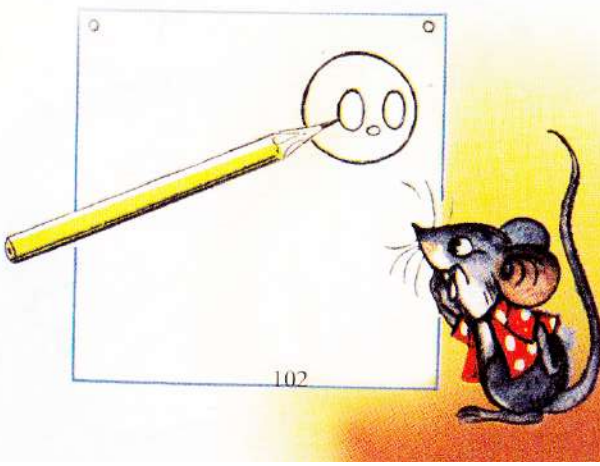


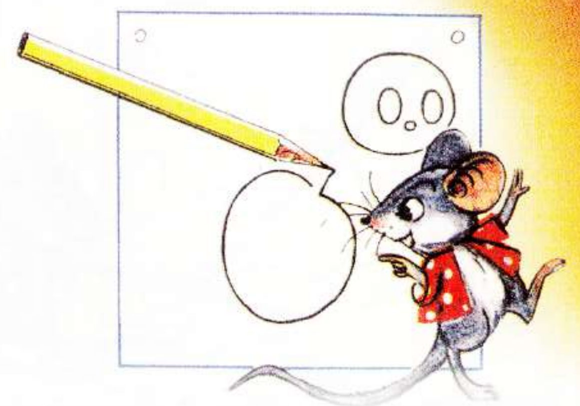
"ठीक है। तुम जो चाहे खींचो। लेकिन उसके बाद मैं तुम्हारा टुकड़ा टुकड़ा कर दूंगा," चूहे ने आक्रोश किया। पेंसिल ने एक लंबी सांस ली । वह एक चित्र बनाने लगा। उसने पहले एक गोला बनाया।

"क्या यह मक्खन है?" चूहे ने बीच में टोका।

"अगर तुम चाहो तो उसे मक्खन बुलाओ " पेंसिल ने जवाब दिया। फिर उसने उस बड़े गोले के अंदर तीन छोटे गोले बनाए।

"यह मक्खन ही है" चूहे को यकीन हुआ, "क्योंकि उसके अंदर छेद है।" इस बार भी पेंसिल ने चूहे को निराश ना किया। "मक्खन के ही छेद होंगे।"

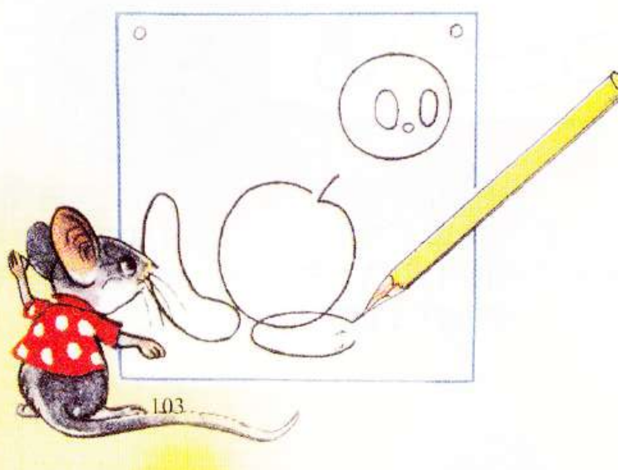


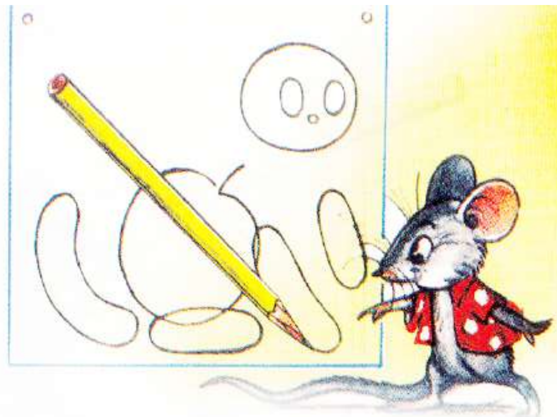


उसके बाद उसने पहले वाले गोले के नीचे एक और ज्यादा बड़ा वाला गोला बनाया।

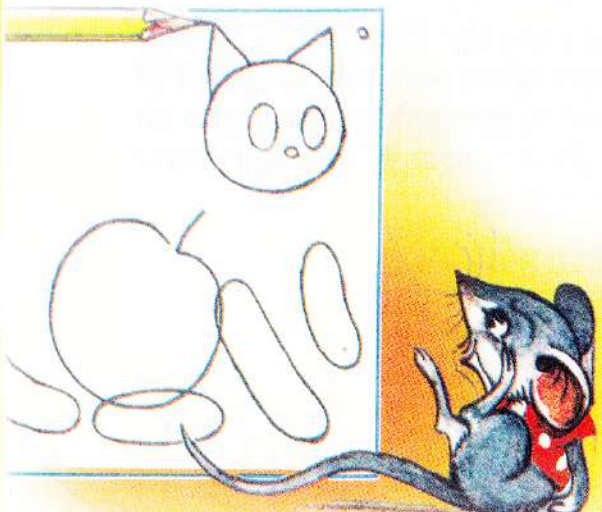
"यह तो सेब ही है।" चूहे के खुशी का ठिकाना ही नहीं था।

"ठीक है। तुम इसे सेब बुलाओ।" पेंसिल ने बोला। फिर वह कुछ टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएं खींचने लगा। "यह तो ककड़ी ही है।" चूहा बोला "जल्दी से खत्म करो। मुझे अपने दांतो को नुकीला करना है, और तेज करना है। चूहा थोड़ा इंतजार करने के लिए तैयार नहीं था।

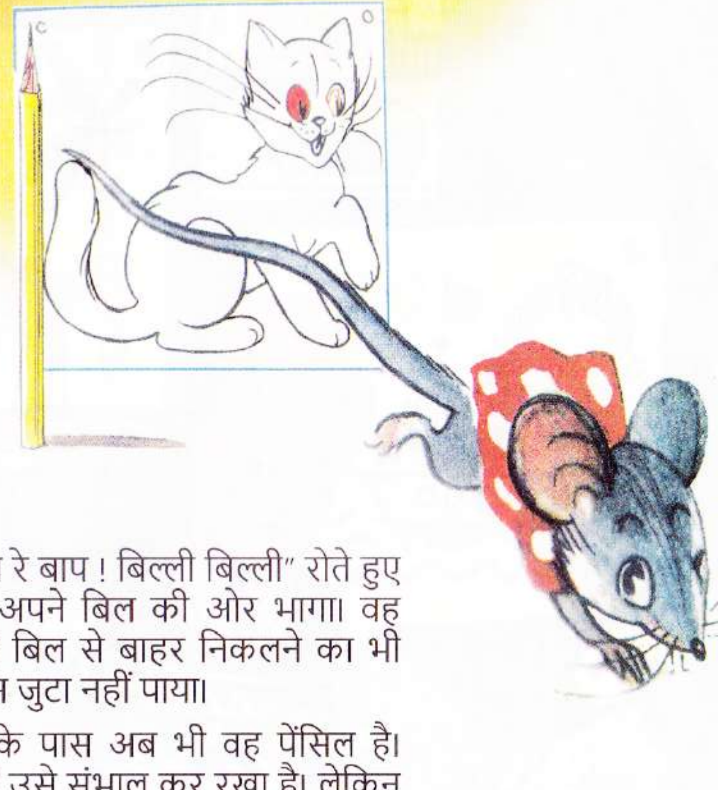




"लो काम हो गया।" पेंसिल ने भी जल्दी से काम खत्म किया और ऐसे कहते उसने पहले वाले गोले के ऊपर दो छोटे त्रिकोण बनाए।



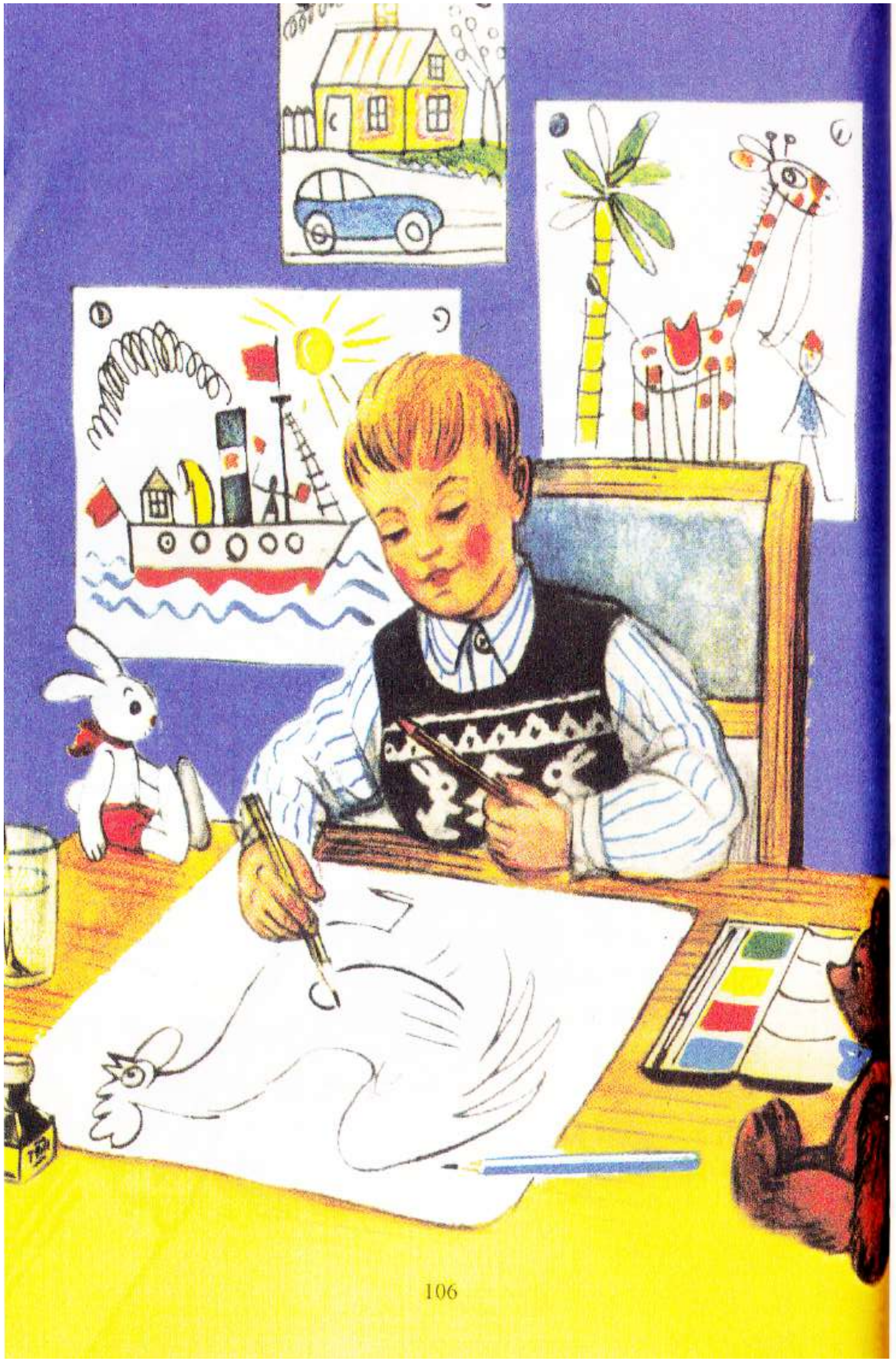
"अरे यार यह तो एक बिल्ली के सामान दिख रहा है।अब और कुछ नहीं बनाना। चूहे ने घबराते हुए कहा। तब तक पेंसिल ने चित्र के बिल्ली को लंबी मूछ, बाल और मुंह बनाकर दे दिया था।



"बाप रे बाप ! बिल्ली बिल्ली" रोते हुए चूहा अपने बिल की ओर भागा। वह अपने बिल से बाहर निकलने का भी साहस जुटा नहीं पाया।

वोवे के पास अब भी वह पेंसिल है। उसने उसे संभाल कर रखा है। लेकिन पेंसिल बहुत छोटा हो गया है।

दोस्तों, क्या तुम एक बिल्ली का चित्र बना सकते हो? चित्र चूहों को डराने लायक होना चाहिए। वोवे ने एक मुर्गे का चित्र बनाया। लेकिन उसे रंग देना वह भूल गया ।



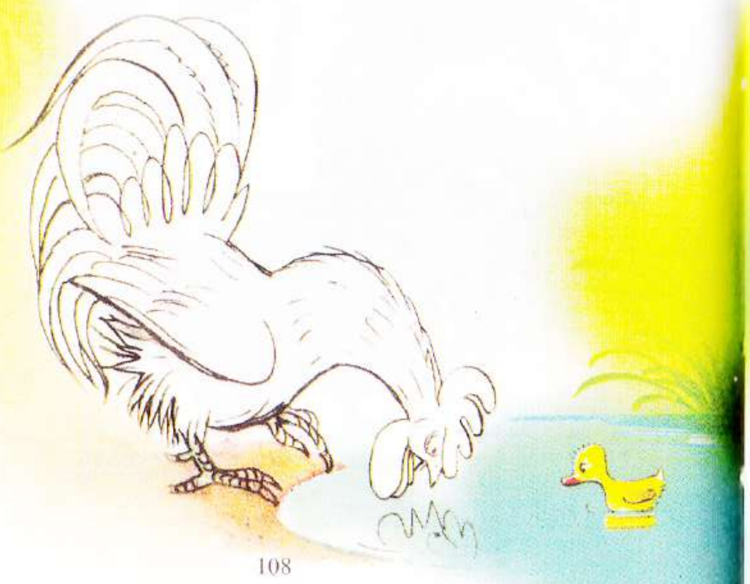


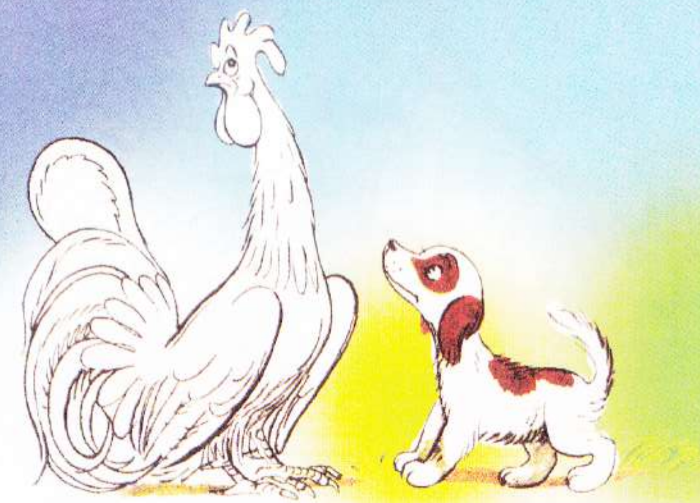
मुर्गा और रंग





एक दिन मुर्गा सैर पर निकल पड़ा। रास्ते में उसे एक कुत्ते का पिल्ला नजर आया। पिल्ले ने मुर्गे से कहा "तुम्हारे शरीर पर रंग नहीं दिया दिया गया है। तुम बहुत अजीब लग रहे हो।" मुर्गे ने एक तालाब के पास जाकर पानी में झांक कर देखा। "हां। पिल्ले ने सच कहा है।"

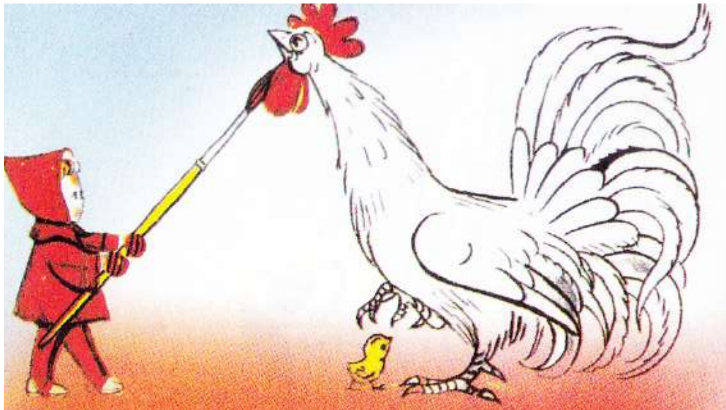




"तुम दुखी मत हो।" पिल्ले ने तसल्ली दी, "तुम रंगों के घर चले जाओ। वो तुम्हारी मदद करेंगे।"

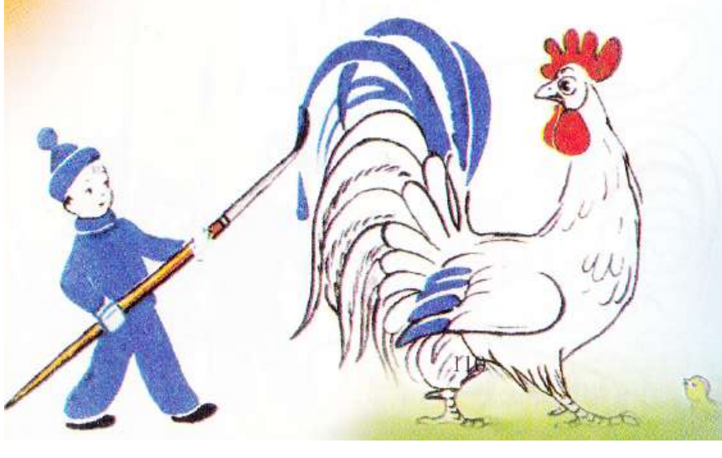
मुर्गा रंगों के पास जाकर विनती करने लगा, "अरे दोस्तों, मेरी मदद करो।"

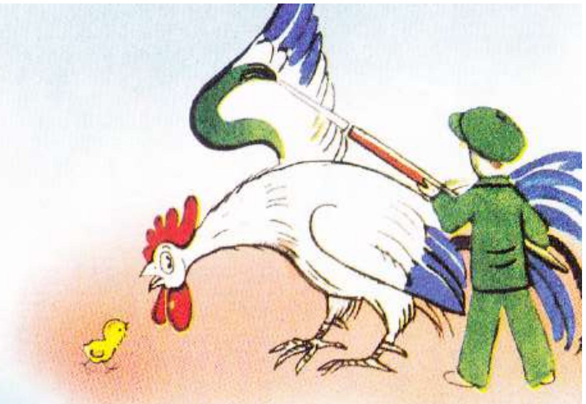




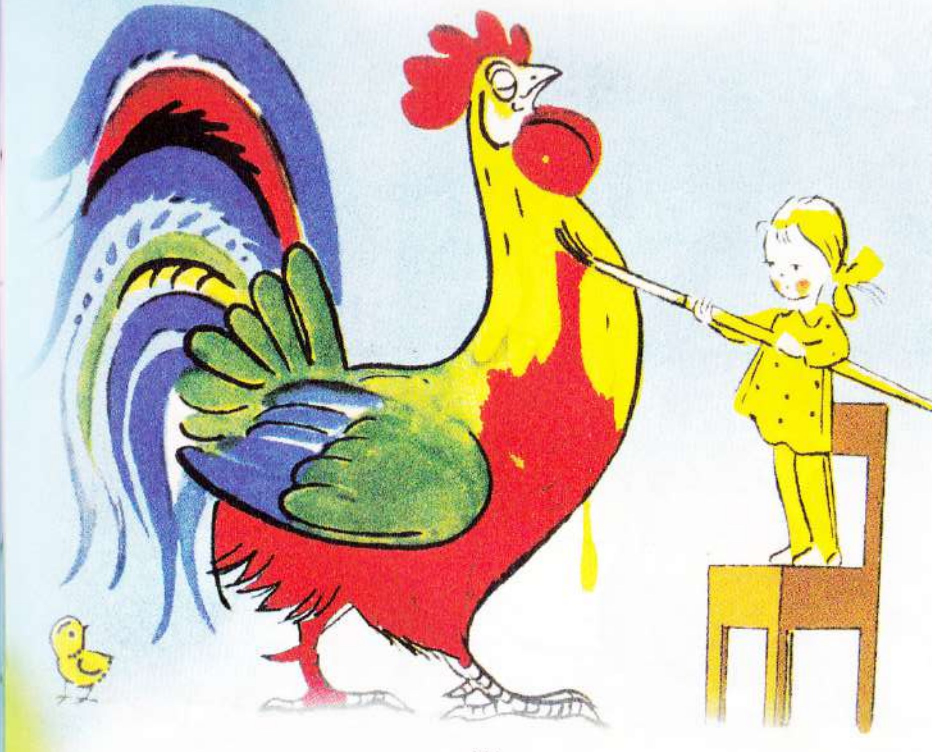
"ठीक है।"

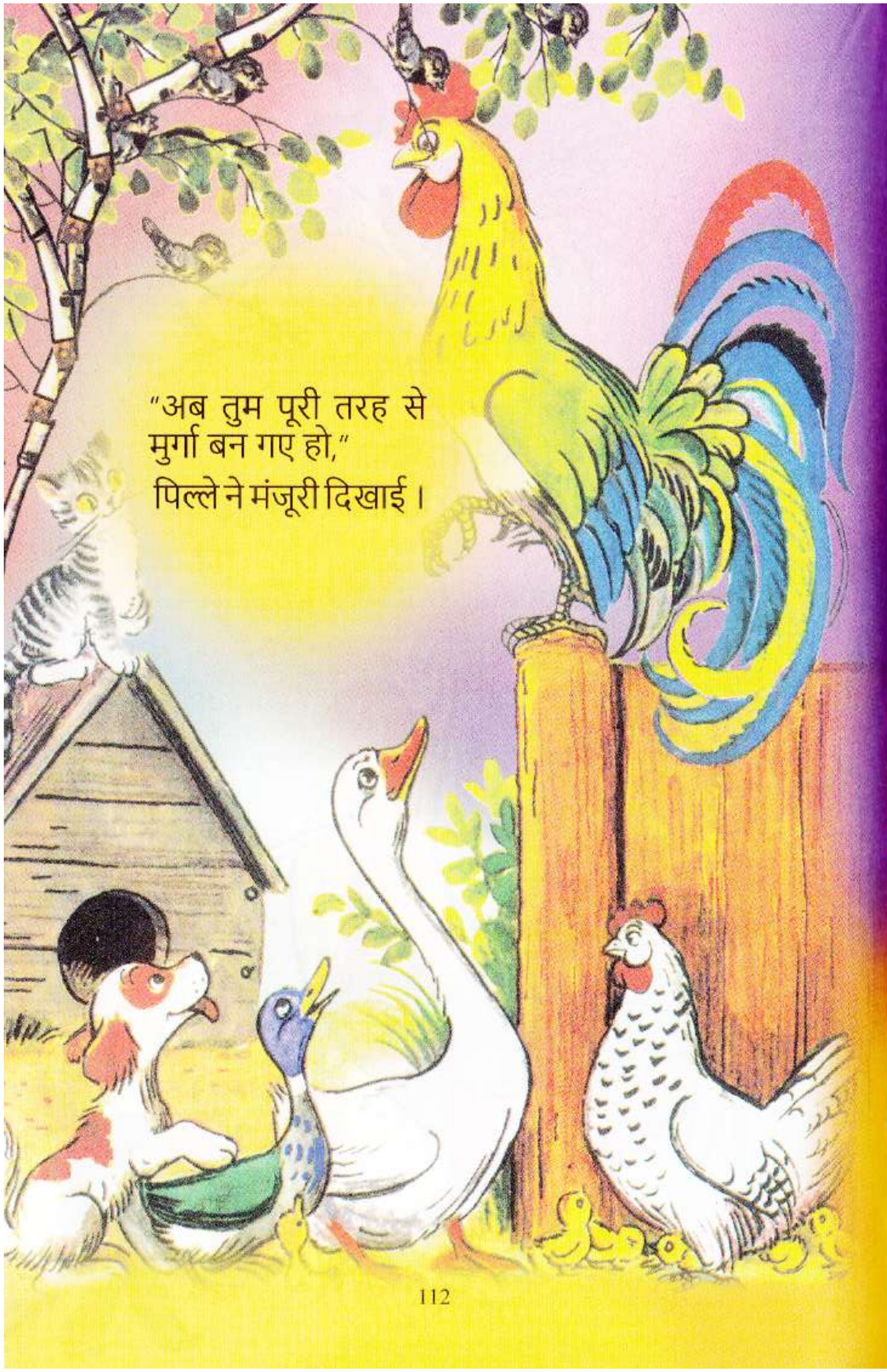
लाल रंग ने कहा। उसने मुर्गे की चोटी और दाढ़ी पर लाल रंग दिया। नीले रंग ने मुर्गे के पूछ के परो पर रंग लगाया।



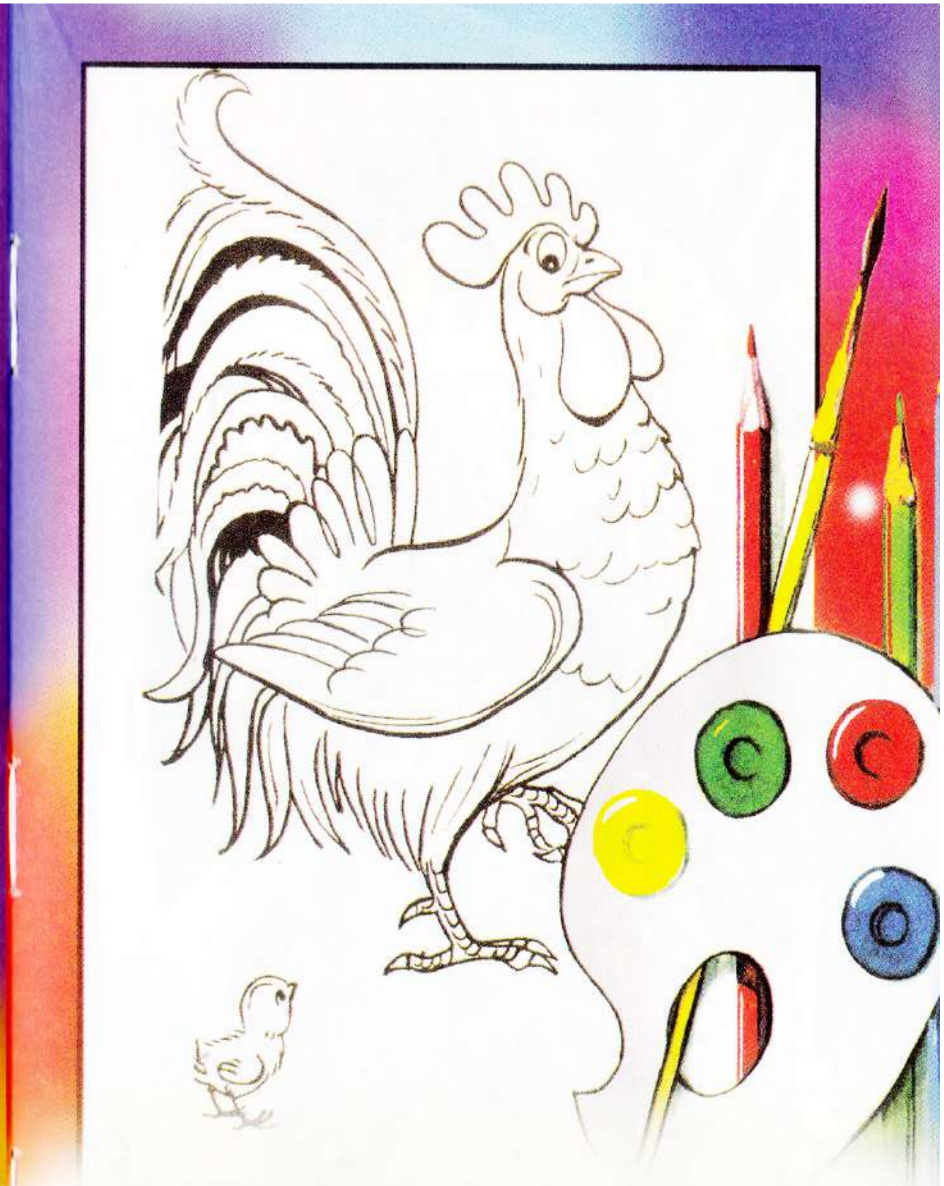


हरे रंग ने उसके पंख को रंग दिया।
पीला रंग तो मुर्गे के गले को पीला करने में जुड़ गया।

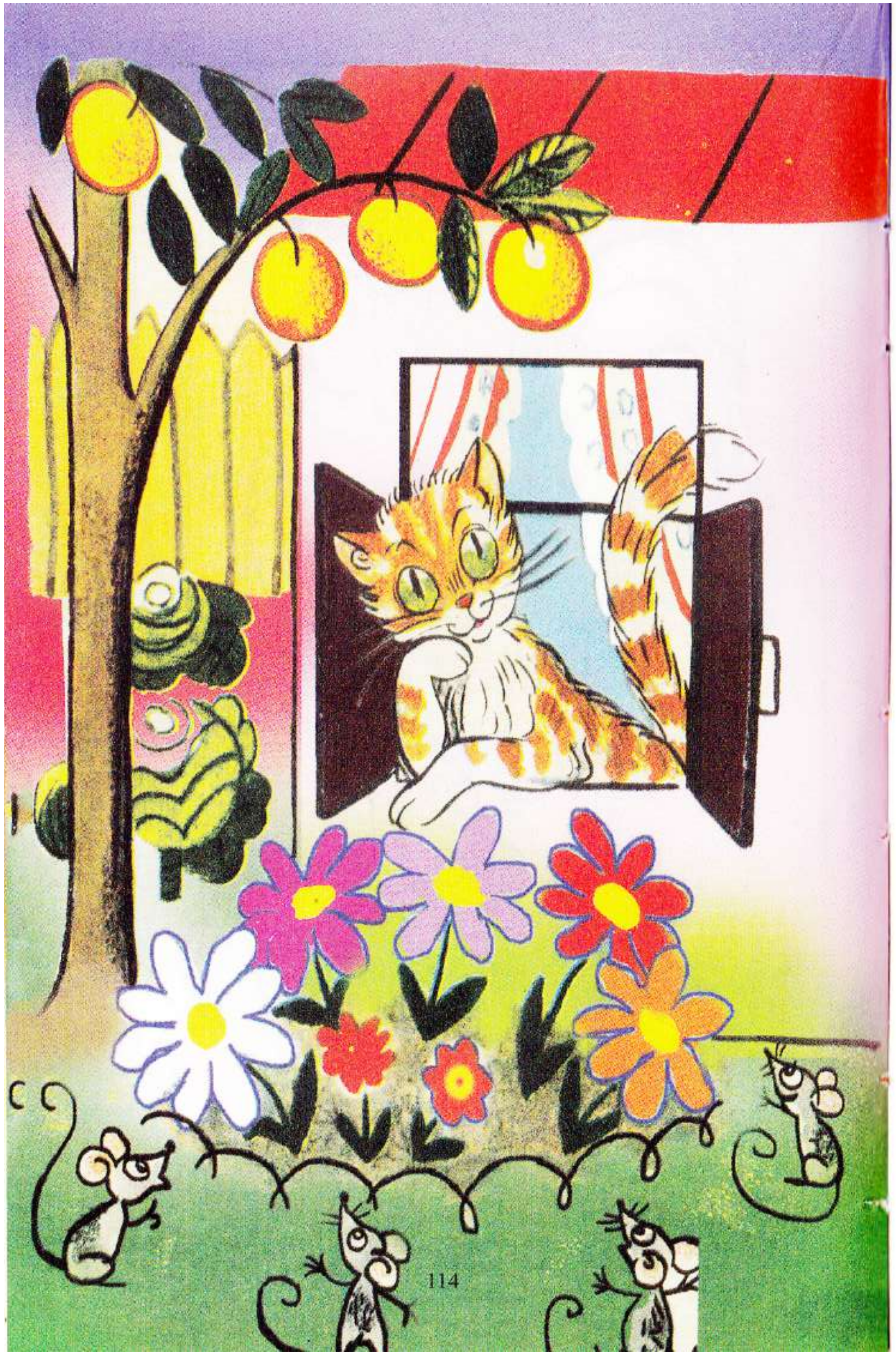




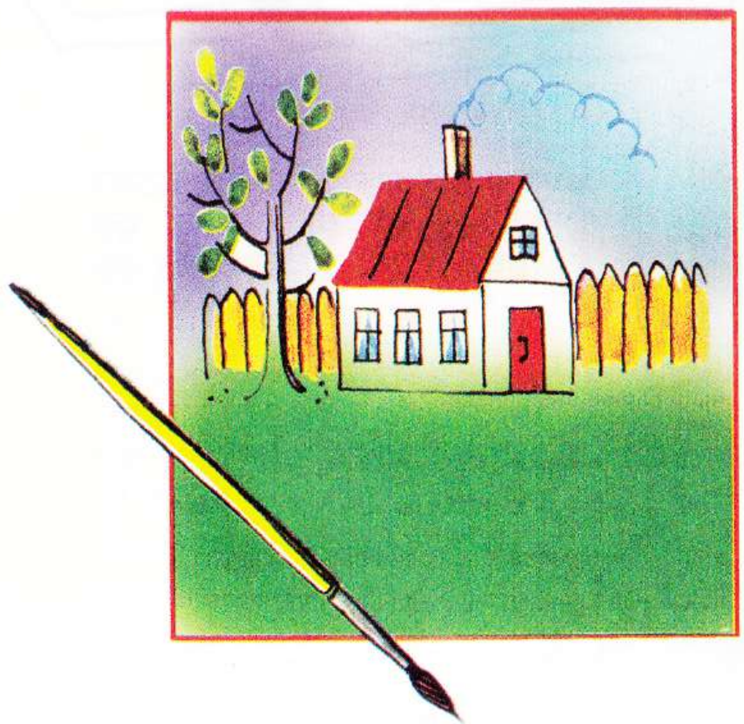
"अब तुम पूरी तरह से
मुर्गा बन गए हो,"
पिल्ले ने मंजूरी दिखाई।

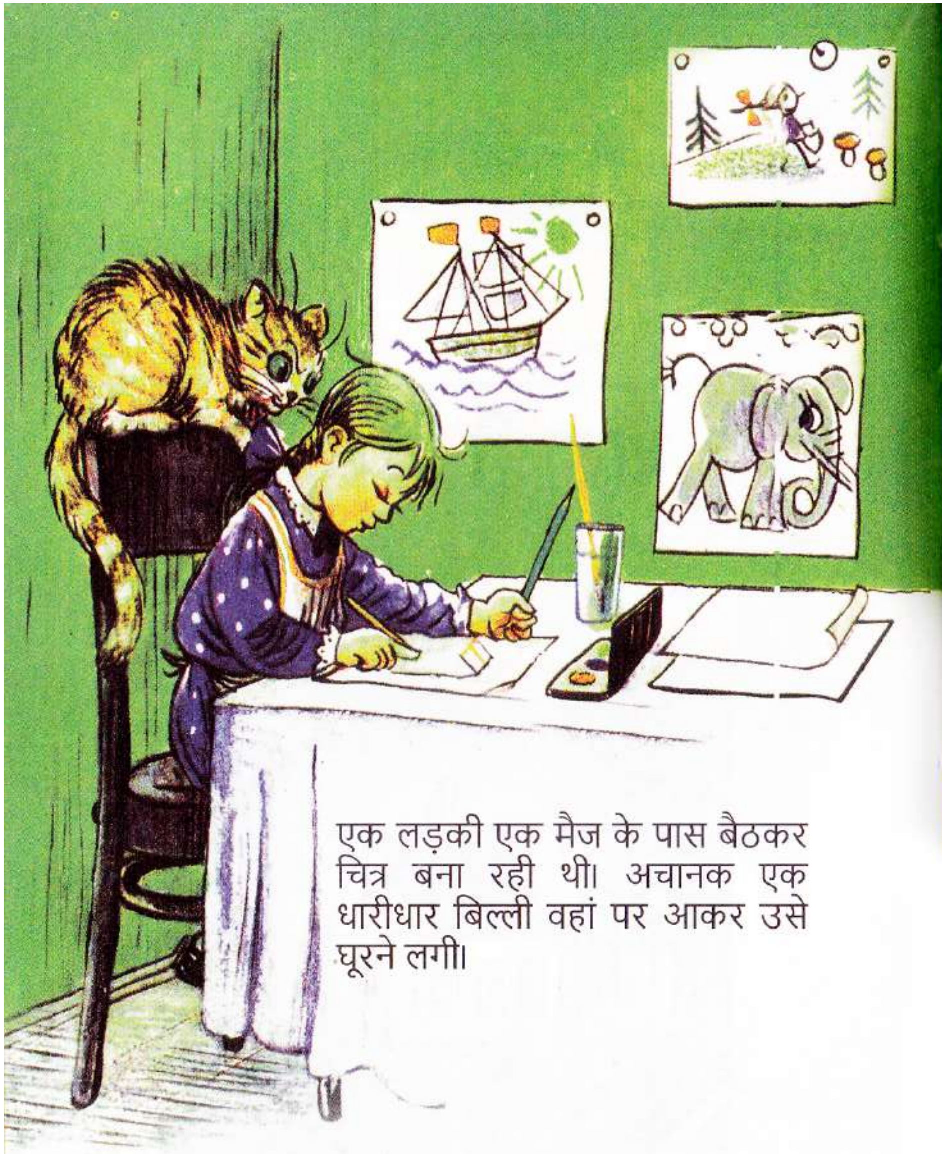


यह एक मुर्गे का चित्र है। उसको अच्छी तरह से रंग लगाओ। उसके पास जो चूजा है उसे पीला रंग लगाना, भूलना मत।

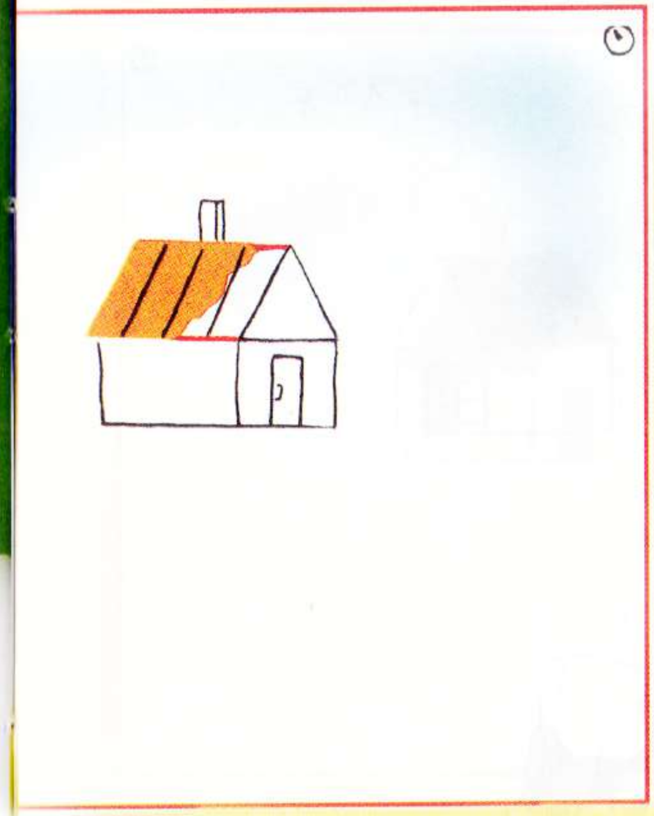


शैतान्नी बिल्ली





एक लड़की एक मैज के पास बैठकर चित्र बना रही थी। अचानक एक धारीधार बिल्ली वहां पर आकर उसे घूरने लगी।



"तुम क्या कर रही हो", बिल्ली ने उत्सुक होकर पूछा।

"मैं तुम्हारे लिए एक घर का चित्र बना रही हूं", लड़की ने जवाब दिया। "देखो यह छत है। यहां से रसोई का धुआं बाहर जाएगा; और यहां पर दरवाजा है।"

"मैं वहां पर क्या करूंगा?"

"तुम चूल्हा जलाकर खाना बनाओगे।"





उसके बाद उसने धुए के बाहर जाने का चित्र बनाया। "लेकिन खिड़की कहां पर है ? हम बिल्लियां हमेशा खिड़कियों से बाहर कूदते हैं।"



"यह लो खिड़कियां।" एक, दो, तीन, चार ऐसा कहकर लड़की ने चार दरवाजों का चित्र बनाया।

"मैं कहां पर टहलने जाऊंगा ?"

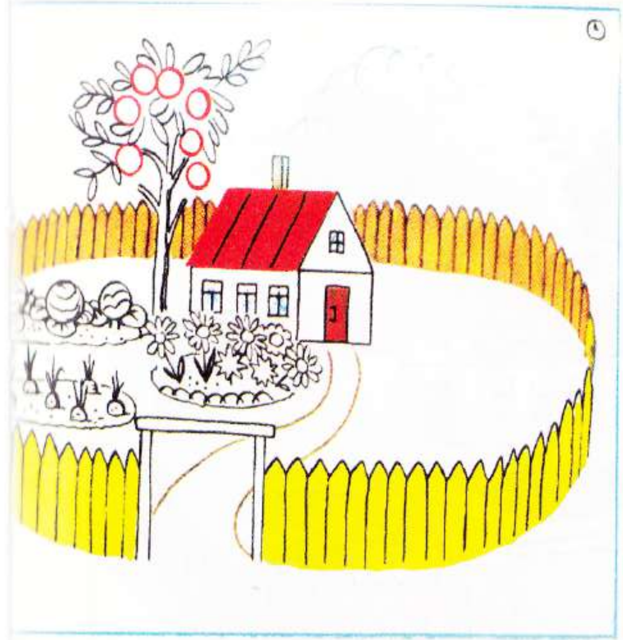


"यहां पर", बात पूरी की ही नहीं, लड़की ने घर की चारों तरफ एक बाड़ बनाई।

"यह है तुम्हारा बगीचा", लड़की ने फिर कहा।

बिल्ली की नाराजगी उसके चेहरे पर छलक रही थी,
"यह कैसा बगीचा है इसमें कुछ भी तो नहीं है?"





"रुको, यह फूलों का बगीचा है। यहां पर आम का एक पेड़ है; उसमें बहुत सारे आम है। यहां पर सब्जियां है। यहां पर पत्ता गोभी और मूली के पौधे भी हैं।"

"पत्ता गोभी", ऐसा पूछ कर बिल्ली ने मुंह फेर लिया। "तो मैं कहां से मछली पकडुगा?"





"यहां से", ऐसा कहकर लड़की ने एक छोटा सा तालाब और उसके अंदर तीन मछलियों का चित्र बनाया।

"बढ़िया ...क्या यहां पर चिड़िया है ? मुझे वह बहुत अच्छी लगती है।"





बिल्ली ने एक और इच्छा लड़की के सामने रखा।

"है ना। यह लो एक मुर्गी, वहां पर एक मुर्गी भी है, एक बत्तख भी है। इससे भी मन ना भरा तो तीन छोटी-छोटी मुर्गियां भी है।"

उसे देखकर बिल्ली खुश हो गई उसने धीमी आवाज में पूछा, "क्या वहां पर चूहे होंगे ?"

"नहीं, चूहे तो नहीं होंगे।"

"कौन मेरे घर की रखवाली करेगा ?"







"यह लो, यह कुत्ता तुम्हारी घर की रखवाली करेगा", कहते ही लड़की ने एक कुत्ता घर का चित्र बनाया। बिल्ली डर के मारे कांपने लगी। उसके सारे रोवे उठ खड़े हुए।

"मुझे तुम्हारा घर अच्छा नहीं लगा। मैं वहां पर नहीं रहूंगा।" गुस्से से बिल्ली वहां से रवाना हुई। कितन्नी शैतान्नी बिल्ली।






फर का पेड़



बच्चे सुबह ही कैलेंडर में कुछ देख रहे थे। आज साल का आखिरी दिन है। कल नए साल की शुरुआत है। उसका जस्न तो कल होगा। खिलौने सब तैयार है। लेकिन सजावट के लिए जो फर का पेड़ चाहिए था वह ही नहीं मिला। आखिर बच्चों ने मिलजुल कर एक फैसला लिया कि बर्फीले दादा को एक चिट्ठी लिखी जाए।

उन्होंने चिट्ठी में बर्फीले दादा से जंगल के सबसे बड़े और सुंदर फर के पेड़ की मांग की।





इस प्रकार का एक खत उन्होंने लिखा।जल्द ही बर्फीले आदमी को बनाने के लिए वे आंगन की ओर दौड़ पड़े।





सब लोगों ने काम शुरू किया। कुछ बच्चों ने बर्फ को इकट्ठा किया। कुछ और ने उसका गोला बनाया... बर्फीले आदमी के सिर पर एक पुराना लोहा उलट कर रख दिया। कोयले से उसकी आंखें बनाए ; नाक के लिए एक मूली को लगा दिया। अरे वाह ! कितना सुंदर दिख रहा है।







यह खत उसको देकर बच्चों ने कहा,

"बर्फीले आदमी बर्फीले आदमी

बहादुर आदमी

जल्दी उस घने हुए जंगल में जाकर इस खत को दे आना

अगर बर्फीले दादा को खत मिला तो वे आज हमें एक हरा-भरा फर का पेड़ उपहार देंगे

सबसे अच्छा फर का पेड़; तुम उसे जल्दी लाना हम बच्चों के लिए बर्फीले आदमी ।"



शाम हो गई। बच्चे अपने घरों में वापस लौट गए। बर्फीला आदमी अकेले पड़ गया। उसने बड़बड़ाया "मुझे यह कैसा काम है मिला ? अब मैं किधर जाऊं ?"

"मुझे भी अपने साथ ले चलो। मैं तुम्हें रास्ता दिखाऊंगा।" बॉबी पिल्ले ने कहा।



"ठीक है", बर्फीले आदमी ने मंजूरी दी। "किसी का साथ हो तो अच्छा है। लेकिन चिट्ठी को संभाल कर पकड़ना और रास्ता भी खो ना जाना।"





बर्फीला आदमी और बॉबी बहुत दूर तक चले। आखिर वे एक घने जंगल में पहुंचे।



एक खरगोश उनके सामने दौड़कर आया।

"बर्फीले दादा किधर रहते हैं?", बर्फीला आदमी खरगोश से पूछा। लेकिन खरगोश को तो जवाब देने की फुर्सत ही नहीं थी; वह बेचारा भाग रहा था क्योंकि उसके पीछे एक लोमड़ी पड़ी थी।



"भौं भौं" बॉबी खरगोश के पीछे भागा। बर्फीला आदमी दुखी हुआ।

"शायद अब मुझे अकेले ही जाना पड़ेगा।"





अचानक तेज हवा आई। बर्फ भी गिर रहे थे। एक आंधी भी आई। बर्फीला आदमी कापने लगा। वह टुकड़ों में टूट कर जमीन पर गिर पड़ा। लोहा, चिट्ठी और मूली गिर पड़े।



तभी लोमड़ी भागकर वहां आ पहुंचा। उसने गुस्से में पूछा, "कौन है वह, जिसकी वजह से खरगोश मेरे हाथ से निकल गया ?"



कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था। बर्फ में सिर्फ एक चिट्ठी पड़ी मिली। उस चिट्ठी को उठाकर वह भाग गया।



बॉबी वापस आया। "बर्फीला आदमी कहां गया ?" लेकिन बर्फीला आदमी नजर नहीं आया। उसी समय जंगल के दूसरी तरफ पर एक भेड़िए ने लोमड़ी को देखा, "क्या है तुम्हारी हाथ में ? क्या है? अब हम उसको बांटकर खाएंगे।"

लेकिन लोमड़ी ने ऐतराज़ दिखाया, "बांट कर ! मुझे बांटना पसंद नहीं है।



मुझे इसकी जरूरत है।" लोमड़ी भाग गया। पीछे पीछे भेड़िया भी। एक छोटी सी चिड़िया भी उत्सुक होकर उनके पीछे पड़ी।



बॉबी रोने लगा। दूसरे खरगोशो ने कहा, "तुम्हारे साथ ऐसा ही होना चाहिए। तुमने क्यों हमें डराया ?"

"आइंदा मैं तुम्हें नहीं डराऊगा।" वह भी जोर से रोने लगा।



"रोना मत, हम तुम्हारी मदद करेंगे।" खरगोशों ने तसल्ली दी।

"हम लोग खरगोशों की सहायता करेंगे", गिलहरियों ने भी अपना ताकत दिखाया।





खरगोशों ने एक नया बर्फीले आदमी को बनाने की तैयारी शुरू की। गिलहरियों ने उनकी मदद की। उस बर्फ के ऊपर एक बार फिर लोहे को उलट कर रख दिया। कोयले से आंख बनाई। नाक की जगह पर एक मूली को रख दिया।



सब उसे भालू के पास ले गए। भालू अपने झोपड़ी में सो रहा था। उन्होंने उसको बहुत मुश्किल से जगाया। बर्फीले आदमी ने उस बच्चों की कहानी भालू को बताई।

"चिट्ठी कहां है ? चिट्ठी!" भालू ने पूछा।

"अरे चिट्ठी ! कहां पर है ? दिखाई नहीं दे रही है।"

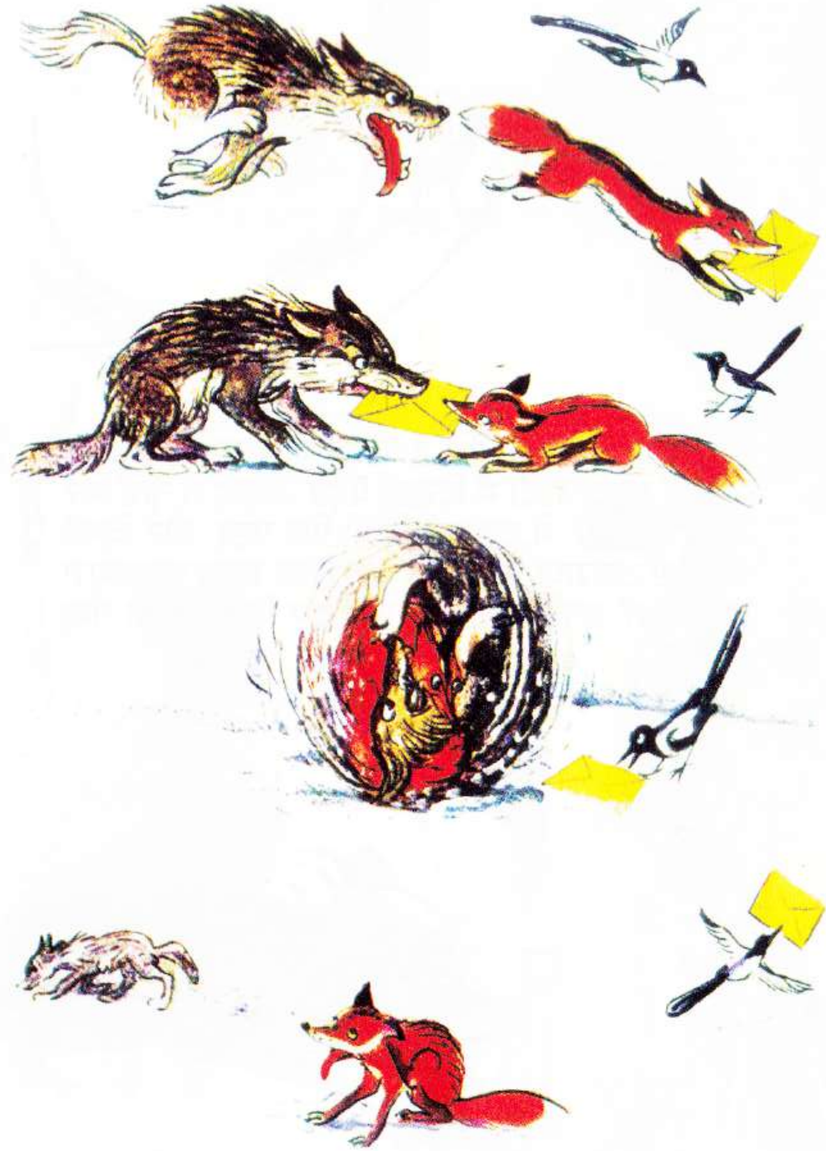






"चिट्ठी के बिना बर्फीले दादा फर के पेड़ को नहीं देंगे। वापस घर लौट जाओ। जंगल के उस पार तक मैं साथ चलता हूं।" भालू ने हौसला दिया।

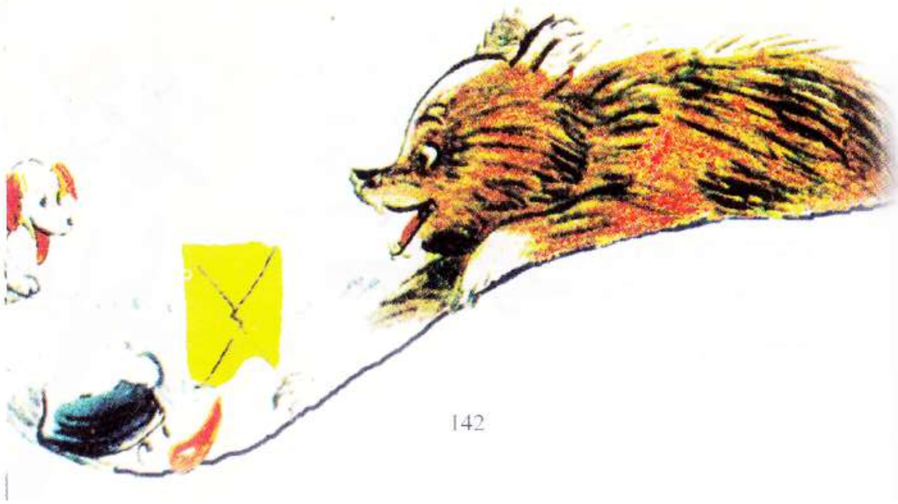
अचानक छोटी सी चिड़िया उड़ते हुए वहां पर आ पहुंची, "यह लो चिट्ठी ! ले लो।" उसने उस चिट्ठी को मिलने की कहानी भी बताई।



यह हुआ था।



सब चिट्ठी लेकर बर्फीले दादा के पास पहुंचे। बर्फीला आदमी बहुत जल्दी में दिखाई पड़ा। ऊंचाई से नीचे गिर पड़ा। घबराहट में वह गड्ढे में भी गिर पड़ा, और किसी पत्थर से टकराया भी। अगर भालू ठीक समय पर सहारा ना देता तो बर्फीला आदमी एक बार फिर चूर हो गया होता।



आखिर सब जानवर बर्फीले दादा से मिले। चिट्ठी पढ़ने के बाद उन्होंने पूछा, "इतनी देरी क्यों हो गई ? क्या तुम नए साल के पहले फर का पेड़ बच्चों तक पहुंचा सकोगे ?"



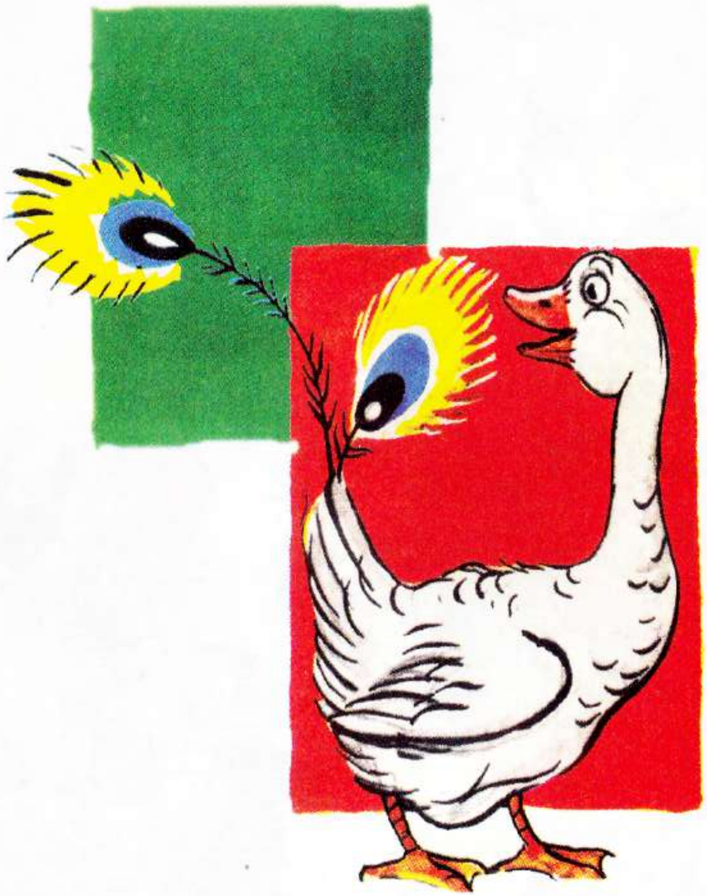


सब जानवरों ने बर्फीले आदमी के पक्ष में बोला। उन्होंने सारी आपबीती बयान की। बर्फीले दादा ने उसे अपने घोड़ों की गाड़ी दी। बर्फीला आदमी फर के पेड़ को लेकर वहां से रवाना हुआ। भालू बसंत के मौसम तक सोने के लिए अपने घर की ओर चल पड़ा।





दूसरे दिन बर्फीला आदमी अपनी पुरानी जगह पर ही खड़ा था। इस बार एक बात थी ; उसके हाथ में चिट्ठी के बजाय फर का पेड़ था।



यह कैसी चिड़िया ?

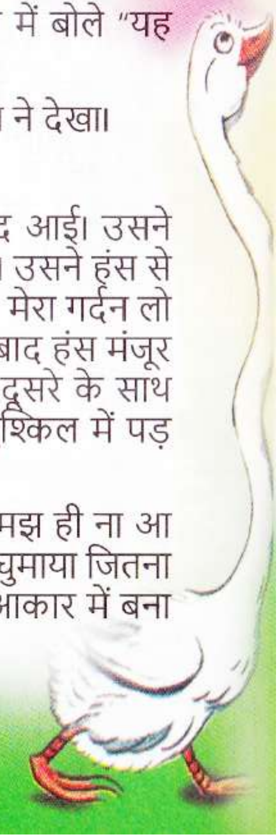


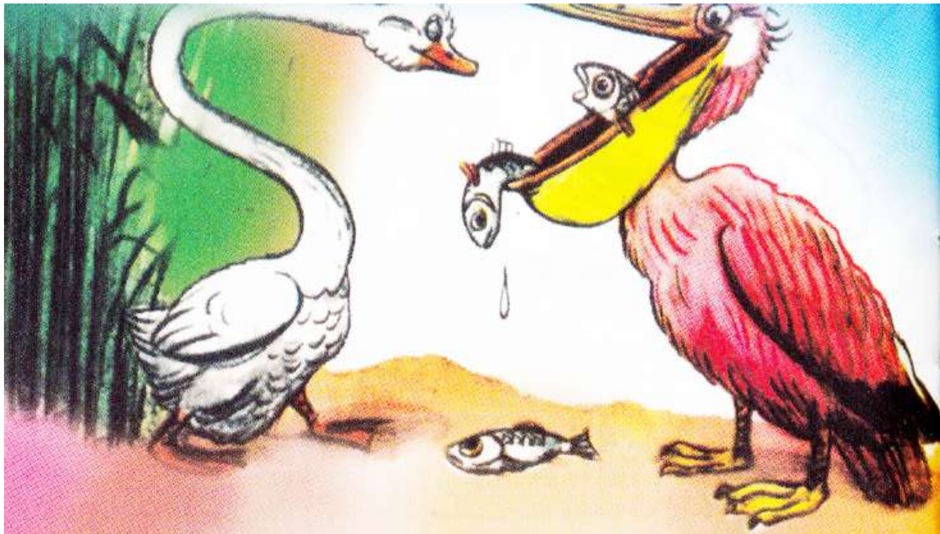
एक जगह पर एक नाकामयाब बत्तख रहता था। वह दूसरे जानवरों और चिड़ियों से जलता था। कभी -कभार झगड़ता भी था। वह सब एक ही आवाज में बोले "यह कैसा बत्तख है" ?

एक दिन तालाब में तैर रही हंस को बत्तख ने देखा।

हंस की लंबी गर्दन बत्तख को बहुत पसंद आई। उसने सोचा, "मेरे पास एक लंबी गर्दन होती तो"। उसने हंस से पूछा, "हम अपने गर्दन को बदलते हैं। तुम मेरा गर्दन लो ले, और मैं तुम्हारा "। थोड़ी देर सोचने के बाद हंस मंजूर हो गया। वे दोनों ने अपने गर्दन को एक दूसरे के साथ बदल दिया। लेकिन लंबे गले से बत्तख मुश्किल में पड़ गया।

"इस गर्दन का क्या करूं ?" उसे कुछ समझ ही ना आ रहा था। उसने अपने गर्दन को एक तरफ घुमाया जितना हो सके उतना लंबा करके एक गोले के आकार में बना दिया। फिर भी कुछ फायदा ना हुआ।





एक गूलर पक्षी ने बत्तख को देखा और जोर से बोला, "तुम एक बत्तख भी नहीं हो और हंस भी"।

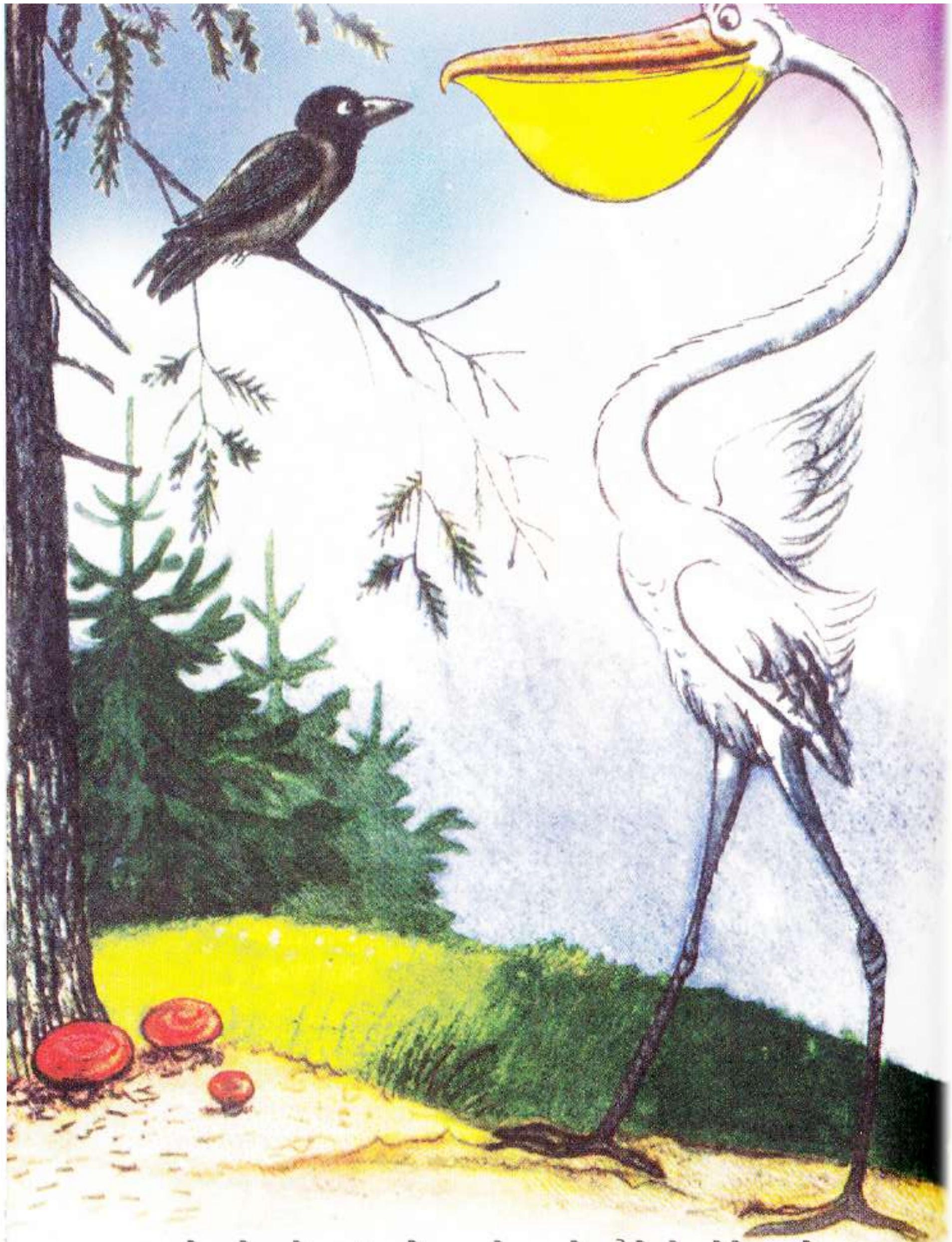
"हा हा हा", बतख आगबबूला होकर उससे झगड़ा करने लगा। तभी उसने उस पक्षी के चोंच के नीचे झूलती हुई एक थैली जैसी चीज को देखा। "काश मेरे पास भी वह होता"। "क्या हम इस की अदला बदली करें", चोंच की तरफ इशारा करते हुए बतख ने पूछा।

"मैं तुम्हें अपना लाल चोंच दूंगा। बदले में तुम्हारा चोंच मुझे दे दो"। गूलर पहले तो हंस पड़ा बाद में लेकिन वह तैयार हो गया। उन्होंने चोंच को भी बदल दिया एक दूसरे में।

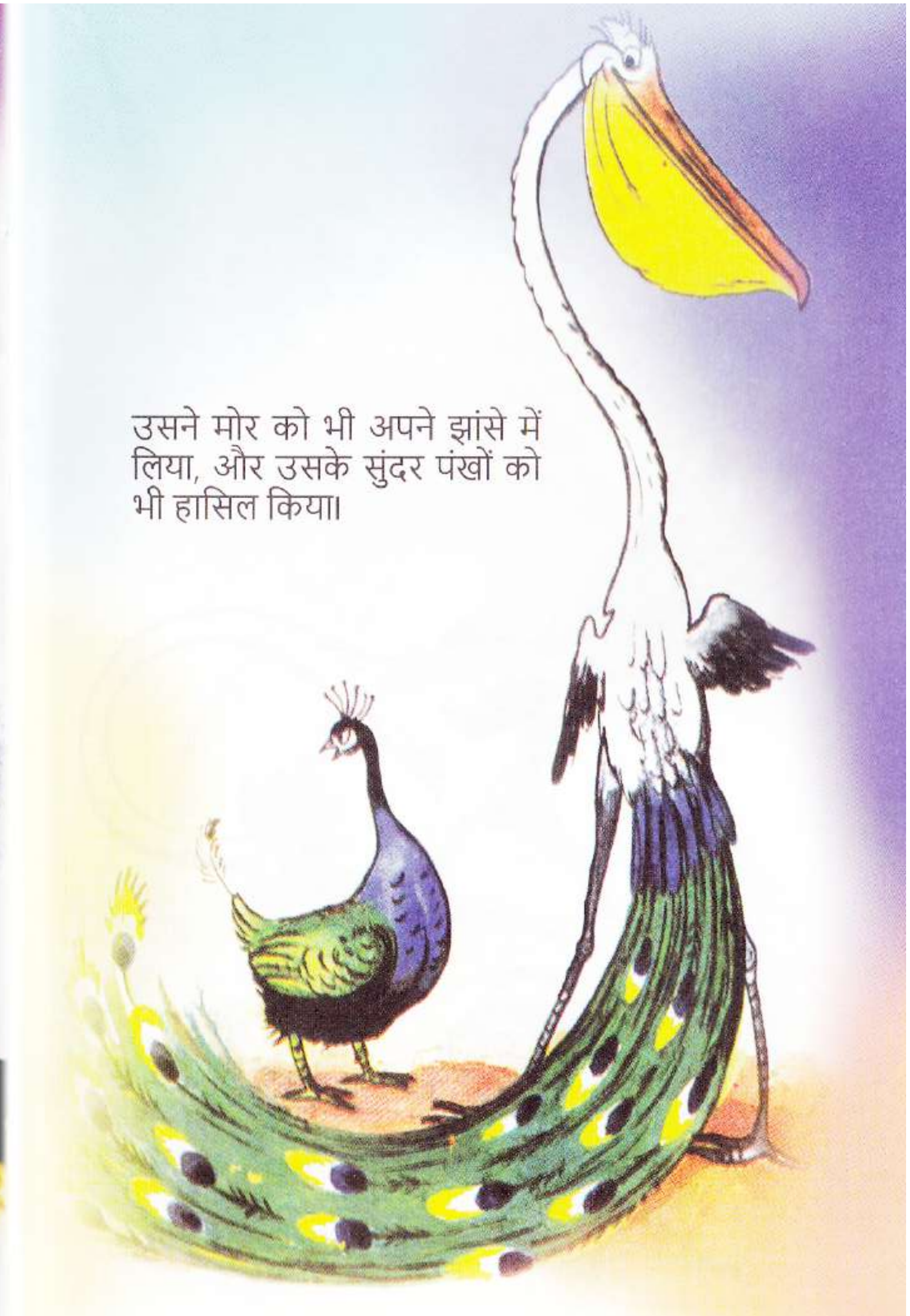




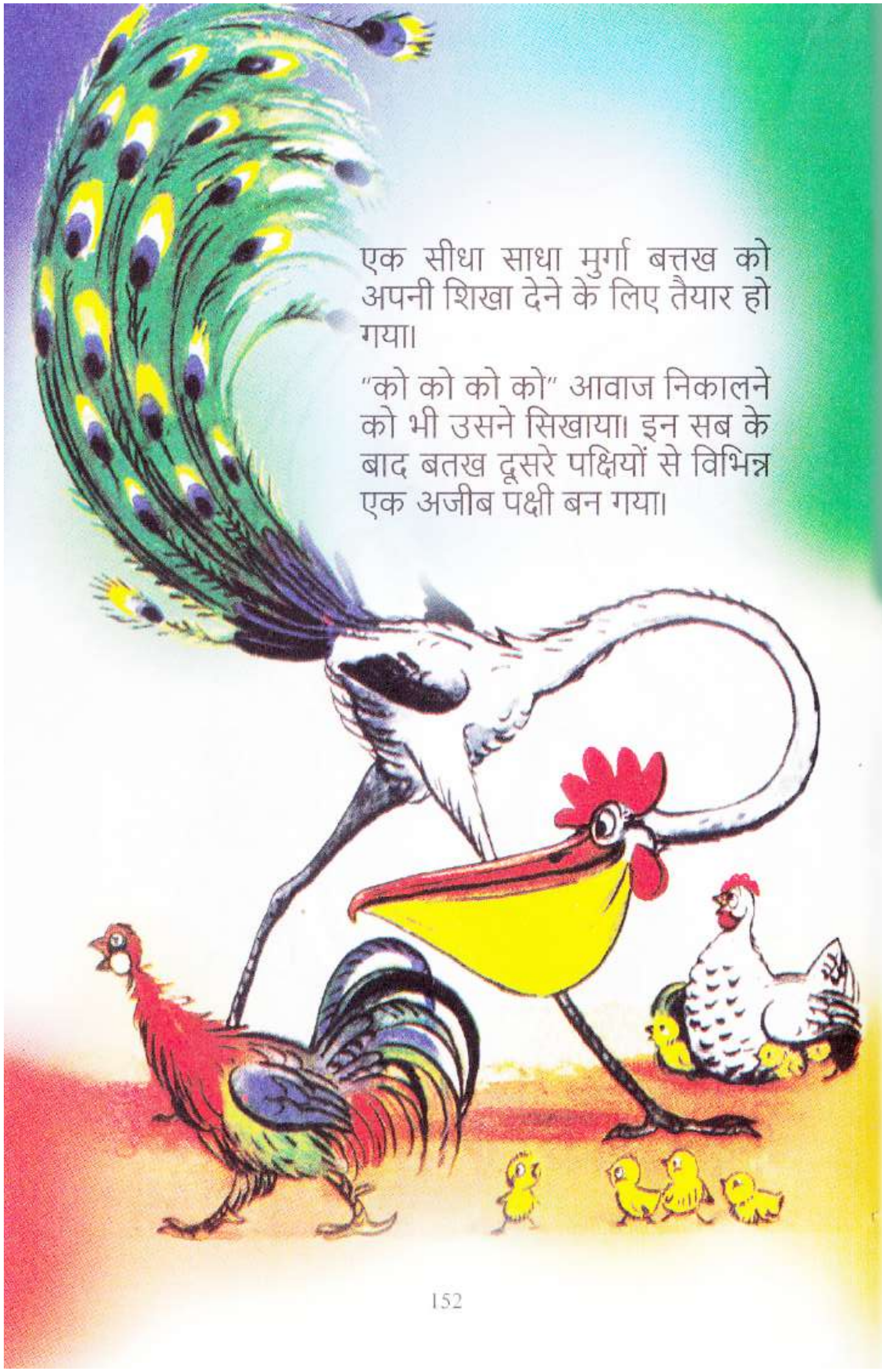
धीरे-धीरे बतख को यह अदला-बदली बहुत पसंद आ गई। उसने एक सारस के साथ अपने पैरों को बदल दिया। अपने चपटे पैरों के जगह उसे सारस के बड़े पतले पैर मिले।



अपने बड़े सफेद पंख के बदले उसने कौवे से छोटे काले पंख ले लिए।



उसने मोर को भी अपने झांसे में लिया, और उसके सुंदर पंखों को भी हासिल किया।

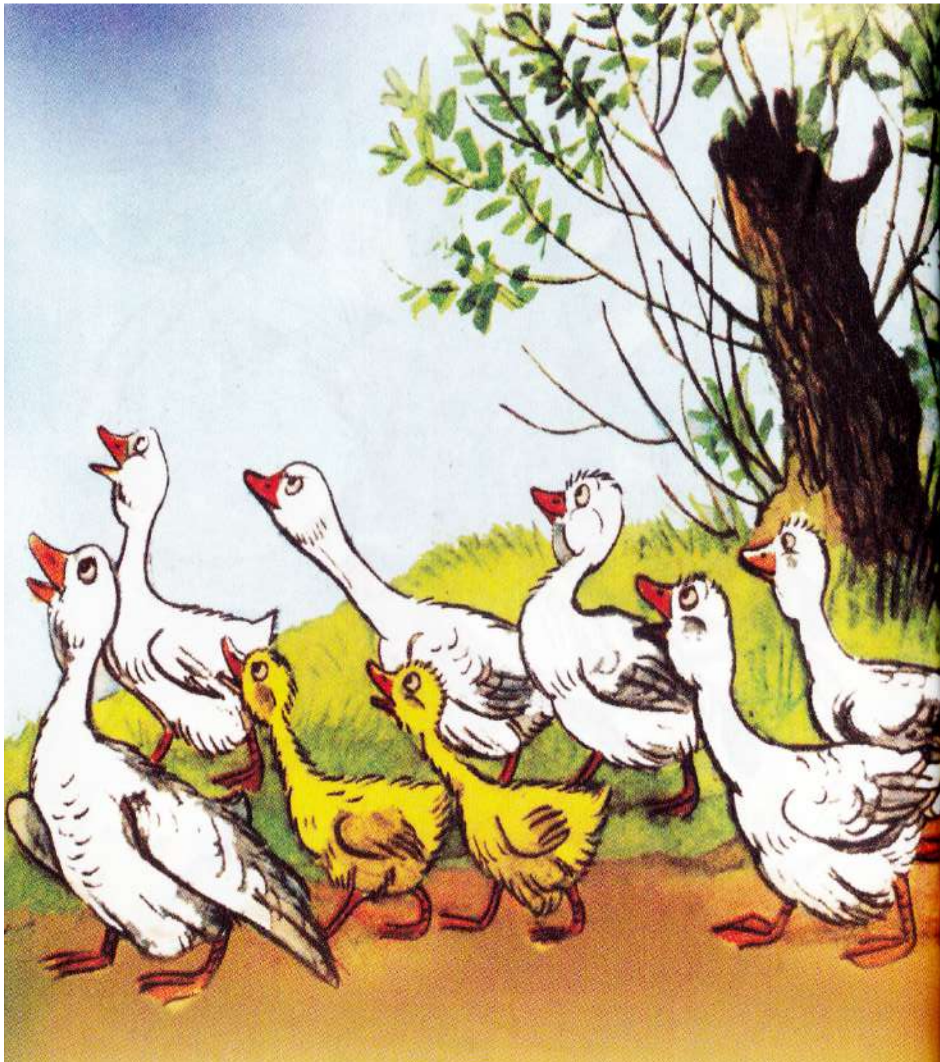


एक सीधा साधा मुर्गा बत्तख को अपनी शिखा देने के लिए तैयार हो गया।

"को को को को" आवाज निकालने को भी उसने सिखाया। इन सब के बाद बतख दूसरे पक्षियों से विभिन्न एक अजीब पक्षी बन गया।

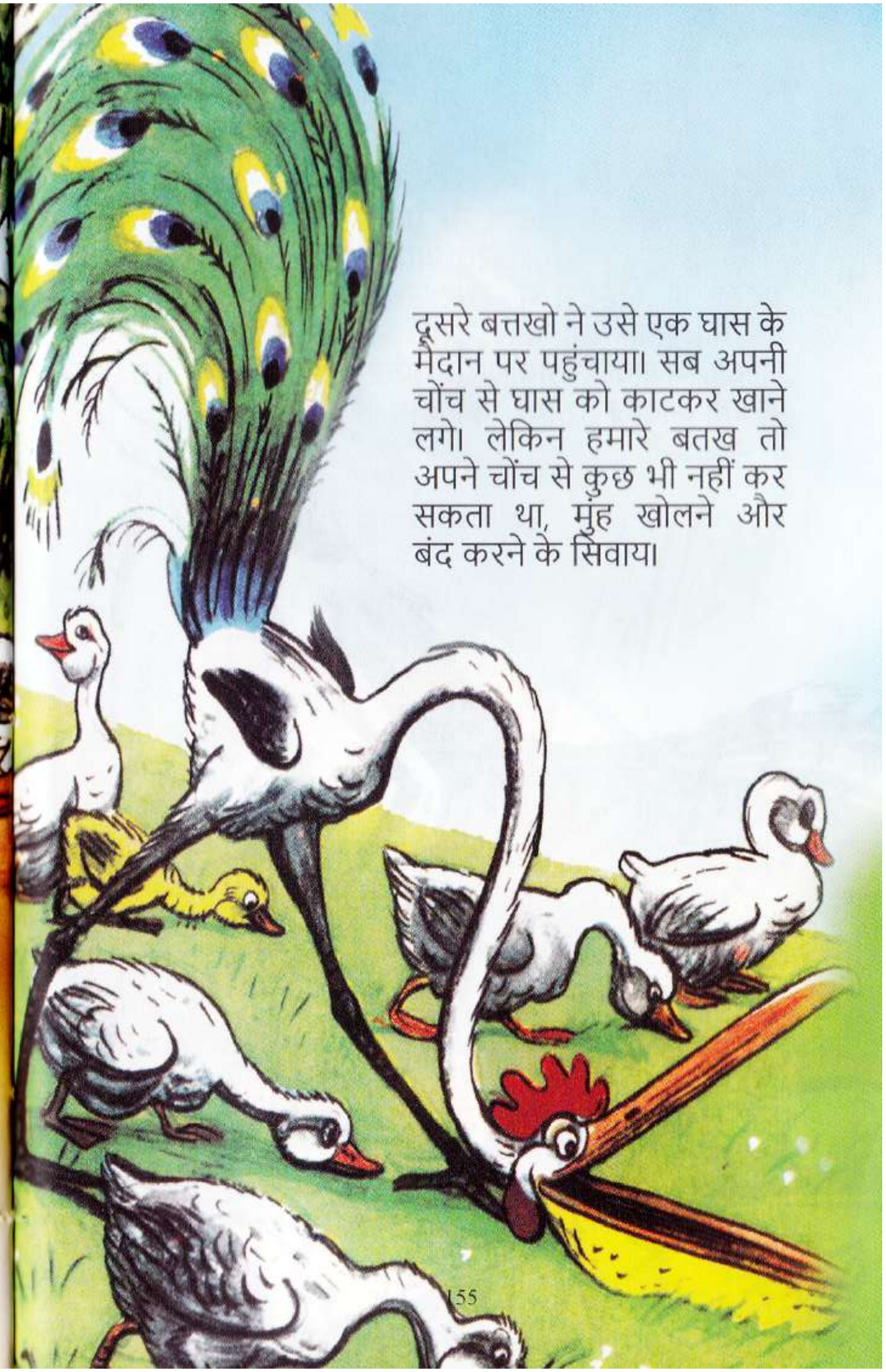


वह अपने अजीबोगरीब अंगों से एक मूर्ख के समान आंगन में इधर उधर चलने लगा। एक दिन उसने एक बत्तख के समूह को देखा। "अरे यार, यह कैसी चिड़िया"? वे चकित हुए।

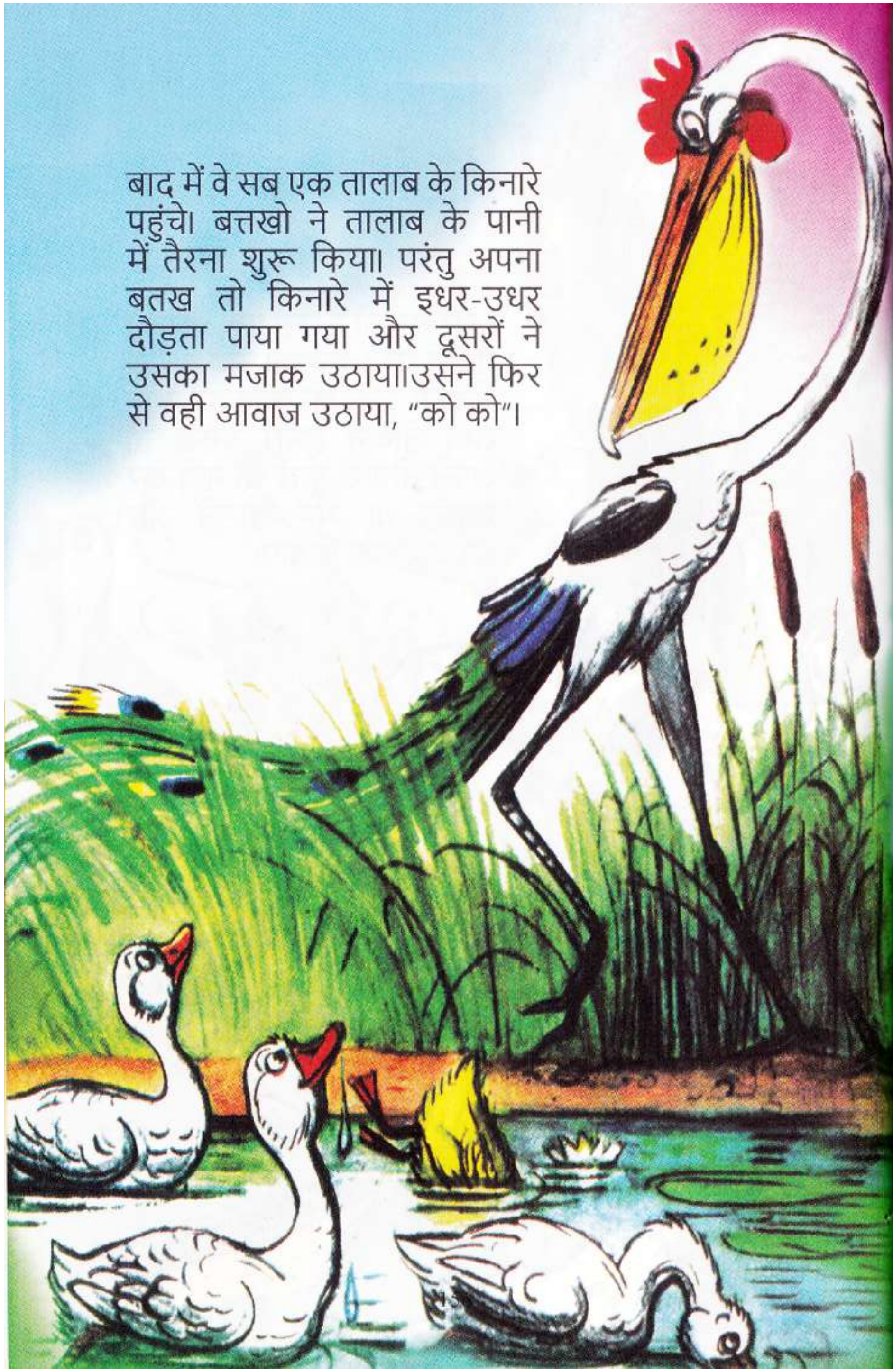


"मैं एक बत्तख हूं", अपने विजित्र पंखों को हिलाते हुए और गले को खींचते हुए उसने कहा। "को को" इस दुनिया का सबसे अच्छा बतक में ही हूं "।

"अगर तुम बतख हो तो हमारे साथ आओ", उन्होंने कहा।



दूसरे बत्तखो ने उसे एक घास के मैदान पर पहुंचाया। सब अपनी चोंच से घास को काटकर खाने लगे। लेकिन हमारे बतख तो अपने चोंच से कुछ भी नहीं कर सकता था, मुंह खोलने और बंद करने के सिवाय।



बाद में वे सब एक तालाब के किनारे पहुंचे। बत्तखो ने तालाब के पानी में तैरना शुरू किया। परंतु अपना बतख तो किनारे में इधर-उधर दौड़ता पाया गया और दूसरों ने उसका मजाक उठाया।उसने फिर से वही आवाज उठाया, "को को"।



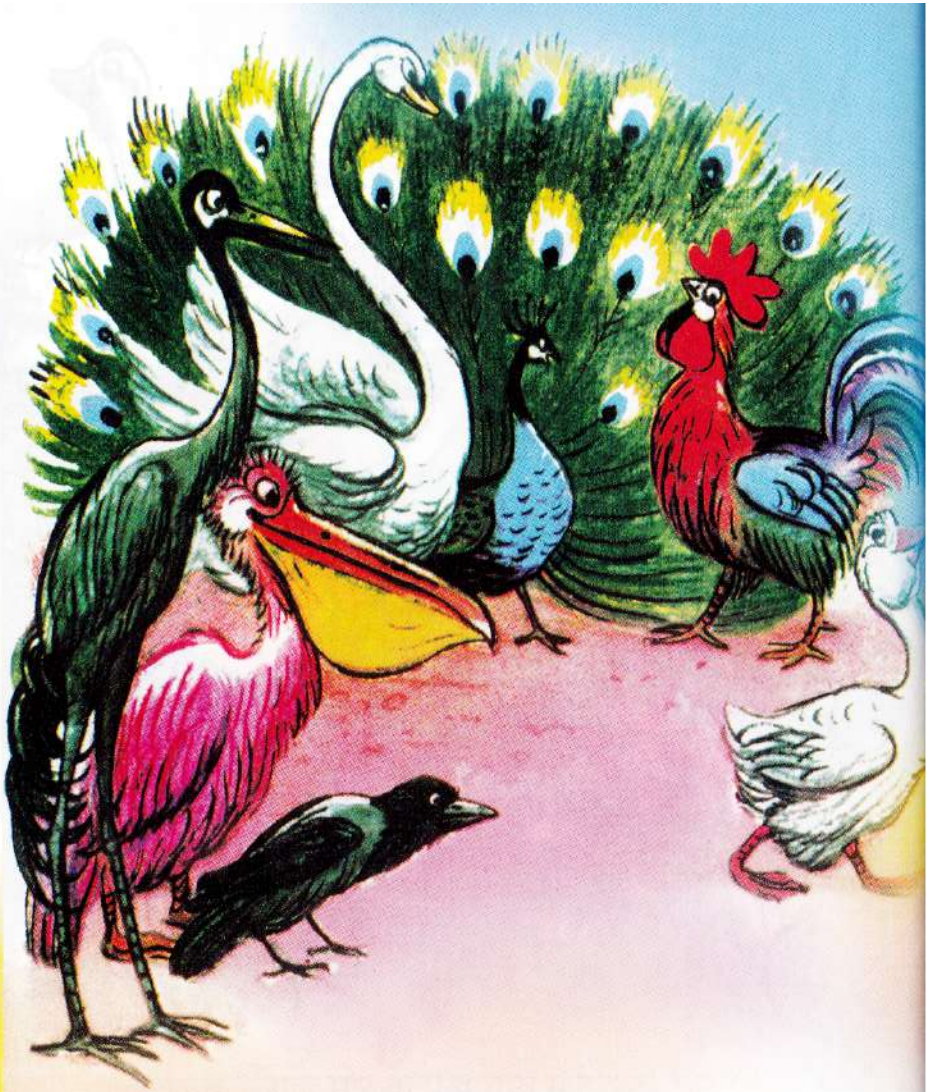
सारे बत्तख पानी से बाहर आए तभी अचानक वहां पर एक लोमड़ी आ गया। वह सब वहां से उड़ गए। हमारा बत्तख कौवे के पंखों के साथ उड़ नहीं सका। वह दौड़ कर भागने की कोशिश करने लगा।



अचानक उसके मोर के पंख घास में टूटकर गिरने लगे। लोमड़ी ने उसके गले को पकड़ा और वहां से चल पड़ा। दूसरे बत्तखो ने यह देखा । वे लोमड़ी के पास जाकर उस पर चारों तरफ से हमला करने लगे। लोमड़ी बतख को छोड़कर वहां से भाग गया।



"तुम लोगों का धन्यवाद! तुमने मेरी जान बचाई। अब समझ में आया कि मुझे क्या करना चाहिए"। उसने वापस जाकर हंस को गला, सारस को पैर, कौवे और मोर को पंख, और मुर्गे को शिखा वापस किया।



इस प्रकार बत्तख फिर से बत्तख हो गया। लेकिन पहले वाला नाकामयाब बत्तख नहीं। आजकल उसे किसी से भी जलन भी नहीं होती।

"यह कैसा बतख"।